यूनान

यूनान
के
कुछ प्रसिद्ध लेख

नवम्बर १९४०] **देश-दर्शन** [मार्गशीर्ष १९९७

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] [संख्या ५

यूनान
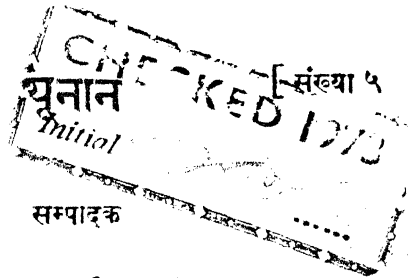
सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-	वार्षिक मूल्य ४)
Foreign Rs. 6/-	विदेश में ६)
This Copy As -/6/-	इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

——:०:——

इटली और यूनान का युद्ध

भूमध्यसागर पर प्रभुत्व जमाने के लिये इटली सेलोनिका बन्दरगाह पर अधिकार करना चाहता था। उसने अकारण ही यूनान पर युद्ध घोषित कर दिया। इटली को आशा थी कि यूनान बिना लड़े ही इटली की सब शर्तें मान लेगा। लेकिन टर्की की उदासीनता और ब्रिटेन की सैनिक सहायता से यूनान ने अद्भुत वीरता दिखलाई। इटली को यूनान खाली करना पड़ा। फिर यूनानी फौजों ने इटली के अल्बेनिया प्रदेश के कई ज़िले पर अधिकार कर लिया। अल्बेनिया की पहाड़ी विषम भूमि युद्ध-यन्त्रों से सुसज्जित इटेलियन सेना के रास्ते में रुकावट डाल रही है। अल्बेनिया की विकराल सरदी हवाई जहाज़ों को भी बेकार कर रही है। लेकिन शीत काल के समाप्त होने पर इस ओर लड़ाई फिर शायद घोर रूप धारण करे।

संक्षिप्त इतिहास

यूनान में प्राचीन काल में जितने नगर थे उतने ही नगर-राज्य थे। नगर-राज्यों में सबसे प्रधान राज्य एटिका का था। एटिका की राजधानी एथेन्स थी। पूर्व ऐतिहासिक काल का हाल जानने के लिये हमें दन्त कथाओं देवगाथाओं पर निर्भर होना पड़ता है। इसी कारण उस काल का इतिहास स्पष्ट नहीं है। तिथि नियत करने में कठिनाई पड़ती है।

लगभग २००० वर्ष ईसा से पूर्व पेलास्गी लोग यूनान के निवासी थे। प्राचीन लोगों का विश्वास था कि पेलास्गी लोग एथेन्स नगर में भूमि से उत्पन्न हुये

थे। इन्हीं लोगों ने सर्व प्रथम किले बनाये और पेलोपेने-सस में साइक्लोपीन दीवार बिना सेमेन्ट के तयार की' कहा जाता है कि यह दीवार अजेय है।

यूनान का नेप्चून देवता

१२ सदी बी० सी० में केक्रोप्स (फोनीशियन) मल्लाह ने इस काल के राजा पेलास्जियन की पुत्री से ब्याह किया। उसने ही सर्व प्रथम उस पहाड़ी की किले-बन्दी की थी जिसका नाम उसी राजा के नाम पर केक्रो-पिया पड़ा है। केक्रोपिया के निवासी केक्रोपिया कहलाये। केक्रोप्स ने १२ गांवों के लोगों को संगठित करके एरियोपेगोस राज्य स्थापित किया। कुछ लोगों का कहना है कि यह संगठन थीसियस ने किया था। केक्रोप्स ने
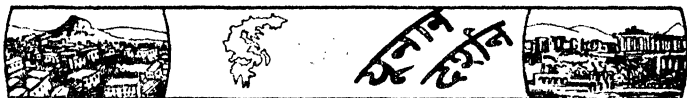
अपनी प्रजा को जहाज चलाना, धातु का काम करना, जैतून की खेती तथा उससे तेल निकालना आदि सिखाया। उसी ने ब्याह प्रणाली यूनान में चलाई और ऐफ्रोडार मत का प्रचार किया। फोनीशियन लोगों ने लायुरियम में सबसे पहले चांदी की खानों का पता लगाया और लोगों को वर्णमाला का ज्ञान कराया जिससे उन्हें व्यापार में सहायता मिली। पेलाल्जी जाति को हेलेन जाति ने परास्त किया।

उस काल में परसे असने (उस वस्तु का नाम है जिसके देखने से मनुष्य पत्थर का हो जाता था) को मारा था। हरकुलीस ने अपनी शक्ति का अपार परिचय दिया था। टेसीअस ने मेनाटाऊ का संहार किया था। जैसन आर्गोनाट लोगों को गोराइन फ्लीस (सुनहरा ऊन) की खोज में ले गया था। और यूलीसीज़ ने ट्राम पर लकड़ी के घोड़े का पत्र बना कर अधिकार किया था।

ट्रेजन युद्ध में सूरमाओं के समय का अंत हो जाता है। उसके पश्चात् उस काल का आरम्भ होता है जब कि मनुष्यों का राज्य यूनान में आरम्भ हुआ। उस

काल में ऊँचीअंख, डोरियन्स आयोनियन्स और अयो-लियन्स नामक चार उपजातियां थीं। यह आपस में आधिपत्य के लिये युद्ध करती थीं। उनमें आधिपत्य के लिये इतना द्वेष भाव था कि वह अपनी जाति के अन्दर भी एक दूसरे से लड़ते थे। यूनान में उस समय कई एक स्वतंत्र रियासतें थीं। वे सभी मिल कर एक सूत्र में वँध जाने का भी प्रयत्न कर रही थीं। उनमें एक राष्ट्र में मिलने की शक्ति भी थी यद्यपि यूनान में उस समय बड़ी उथल पुथल थी। वे सभी हेलेन कुल की थीं। उनकी भाषा एक थी और वह एक ही देवताओं की पूजा भी करती थीं। इस प्रकार उनके संगठन के लिये यह तीन बड़ी गांठें थीं।

कुछ समय के पश्चात् वह काल आया जब कि सब अपने को हेलनी कहने लगे। वे संसार के दूसरी जातियों को बारबेरियन (असभ्य) कहने लगे। उन्होंने अपने देश का नाम हेलास रक्खा। हेलनी जाति ने बड़ी उन्नत्ति की और पास के द्वीपों, एशिया माइनर तथा काला सागर के तट के प्रधान नगरों इटली, सिसली, अफ्रीका के उत्तरी तट, मिश्र के व्यापारिक केन्द्रों पर अधिकार
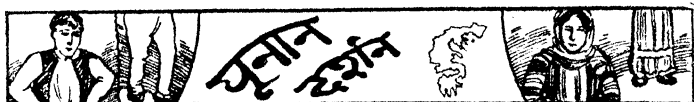
कर लिया और फ्रांस तथा स्पेन में अपनी बस्तियां बना लीं।

हेलास जाति की मुख्य पर्शियन जाति थी। अपने शत्रुओं के विरुद्ध हेलन जाति ने मराथन (४६० वर्ष ईसा से पूर्व) सलमिस (४८० वर्ष ईसा के पूर्व) की दो

हेलेन स्पान्ट को पार करना

लड़ाइयाँ जीतीं। लगभग डेढ़ सौ साल पश्चात् सिकन्दर (हेलन जाति का सेनापति) ने पर्शियन जाति को चुनौती दिया। वह फाररा को जीतने के लिये चला और मार्ग में उसने मिश्र को अपने अधिकार में किया और सिकन्दरिया का नगर बसाया। फारस को जीतने के पश्चात् वह उत्तरी भारत की ओर बढ़ा। परन्तु ३२३ वर्ष ईसा के पूर्व उसकी मृत्यु हो गई तो उसका साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। उसी समय हेलन जाति के आधि-

पत्य को चुनौती देने के लिये योरुप में रोमन जाति तयार हो गई। उन्होंने हेलन जाति के बहुत से उपनिवेशों पर अधिकार कर लिया और १४६ बी० सी० में उन्होंने रोमन प्रान्त की नींव डाली और देश का नाम बदल कर यूनान रक्खा।
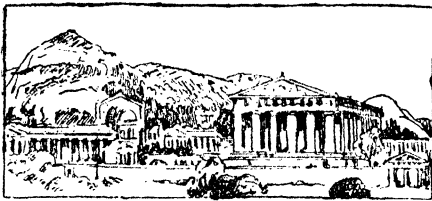
प्राचीन ओलम्पिया नगर। यहीं खेल खेले जाते थे।

यूनान एक जादू का देश है। यूनान के देवता ओलिम्पस पर्वत पर रहा करते थे। उन्होंने अवश्य ही अपने जादू के बल पर यूनान को बनाया होगा नहीं तो फिर यह कैसे हो सकता है कि एक ही काल में यूनान में बहुत बड़ी संख्या में चतुर, ज्ञानी तथा सूरमा पैदा हो गये।

योद्धा, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक, कवि, नाटककार, शिल्पकला के चतुर ज्ञानी और मकान बनाने वाले सुजान कारीगर वहां पैदा हुये जिनकी प्रशंसा केवल उनके देश में ही नहीं वरन् समस्त संसार में सदैव के लिये
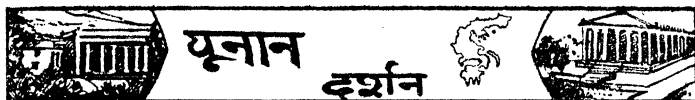
स्थापित हो गई। अपनी बुद्धि तथा शक्ति से हेलन लोगों ने ऊँची सभ्यता की स्थापना किया जो उनके साम्राज्य में फैल गई थी। यद्यपि उनको रोमन जाति ने परास्त कर दिया तो भी इनकी सभ्यता रोमन साम्राज्य में प्रचलित रही और योरुपीय सभ्यता पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा। अपनी सुन्दर अनोखी भाषा, सुन्दर भवनों और अद्वितीय शिल्पकला के कारण उनकी धाक आज भी वर्तमान सभ्यता में जमी हुई है।

यूनान देश एक सुन्दर देश है। यदि वहाँ से उसकी प्राचीन विशेषताओं का भी अन्त हो गया होता तो भी वह एक सुन्दर देश होता।

उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में यूनान तुर्कों के अधिकार में था। यूनान तुर्कों के आधिपत्य में लगभग चार सौ वर्षों तक रहा। तुर्कों ने यूनानी लोगों पर अत्याचार करके उन्हें नष्ट कर डाला था और वह बिलकुल गुलाम बन गये थे। उसी समय हेलास लोग फिर उठे और अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करके वर्तमान यूनान की स्थापना करने के लिये तत्पर हुये। उनके हृदय में उनके जाति का अभिमान था, देश भक्ति का

प्रेम सागर उनमें उमड़ रहा था। वे अपनी शूरवीरता दिखाने के लिये भड़क उठे। उनकी नसों में हेलन सूरमाओं का खून दौड़ रहा था। वे स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिये उठ खड़े हुये। १८२१ ई० में उन्होंने स्वतंत्रता के युद्ध की लड़ाई किया। १८३० ई० तक उन्होंने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर लिया और १८३२ ई० में यूनान एक स्वतंत्र राज्य घोषित किया गया।

यूनानी लोग ईसाई हो गये थे वे केवल तुर्कों से ही अपनी स्वतंत्रता के लिये युद्ध नहीं कर रहे थे वरन् वह मुसमली धर्म के विरुद्ध धार्मिक युद्ध भी कर रहे थे। योरुप में यूनानी लोगों के प्रति सहानुभूति की गई और शीघ्र यूनानियों की सहायता के लिये योरुपीय सेना भेजी गई। नवारिनों में १८२७ ई० में प्रसिद्ध समुद्री युद्ध हुआ। इँगलिश, फ्रान्सीसी और रूसी मिश्रित सेना ने तुर्की जहाजी बेड़े को परास्त किया। तभी से अँग्रेज़ों और यूनानियों में मित्रता हो गई और वे एक दूसरे का साथ देते चले आये। १९२४ ई० में स्वतंत्रता के युद्ध के आरम्भ होने के १०३ वर्ष बाद यूनान स्वतंत्र प्रजातंत्र राज्य स्थापित किया गया।

यूनान की प्राकृतिक बनावट

यूनान योरुप के दक्षिण में एक प्रायद्वीप है। यूनान के चारों ओर समुद्री तटों पर अर्ध व्यास के आकार में पहाड़ियां हैं। इन पर्वतों के बीच में सुन्दर मैदान हैं। यह मैदान चारों ओर पहाड़ियों से घिरे हैं। पहाड़ियों पर ऊँची चोटियां हैं। मैदानों में पर्वतीय श्रेणियों के कारण बड़ी बड़ी नदियाँ नहीं बन सकी हैं तो भी छोटी नदियों ने पर्वतों के मध्य अपने मार्ग बना लिये हैं। यह नदियां मैदान में आकर मिल जाती हैं और घूमती हुई घाटी होकर समुद्र में जा गिरती हैं। उपजाऊ मैदानों में वनस्पति का संचार हुआ और अब वहाँ पर अच्छी उपज होती है। कुछ भागों की पहाड़ियों पर सघन बन थे परन्तु कुछ बंजर पहाड़ियों के प्रान्त भी थे जहाँ पर वृक्षों की जड़ें प्रवेश ही नहीं कर सकती थीं कहा जाता है कि पर्वतों के समीप राक्षस रहा करते थे और बनों में परियां निवास करती थीं।

यूनान के द्वीप आइओनियन समुद्र में फैले हुये हैं। एजियन सागर में यनानी द्वीपों का समूह है। समुद्रों

के बीच बीच में पर्वत दिखाई पड़ते हैं जो देखने में पर्वत से घिरी हुई झीलों की भाँति प्रतीत होते हैं।

प्राचीन काल में यूनान में बहुत भूकम्प आया करते थे। भूकम्पों के कारण यूनान में बहुत से परिवर्तन हो गये हैं। इनके कारण पर्वतों, द्वीपों, मैदानों आदि की सूरत में अदल बदल हो गया है। प्राचीन वन भी यूनानी लोगों ने काट कर साफ कर दिया है। परन्तु फिर भी यूनान एक ऐसा देश है जिससे प्रतीत होता है कि प्रकृति ने टुकड़ों को जोड़ कर बनाया है। यूनानी लोग अब भी विश्वास करते हैं कि पर्वतों तथा बनों में देवी, देवता तथा परियां निवास करते हैं।

यूनान के लोगों को नीला रंग बहुत पसंद है। नीला रंग वहाँ प्रधान है। किसी स्वच्छ दिन में यदि यूनान का अवलोकन किया जाय तो आकाश, समुद्र तथा यूनान का स्थली भाग सभी नीले दिखाई पड़ेंगे। उस समय बंजर पर्वतीय स्थान चांदी की भाँति श्वेत, चट्टान वाले स्थान भूरे चमकीले दिखाई पड़ते हैं। नीचे के मैदान उपजाऊ हैं और वहाँ पर हरियाली छाई रहती है। मैदान में

ज़ैतून के बाग़ हैं। जब अंगूर के बाग़ भली प्रकार पक जाते हैं तो उनका रंग लाल हो जाता है।

यूनान की हवा बड़ी साफ तथा शुद्ध रहती है। वहाँ की हवा गर्द से इतनी साफ रहती है कि मनुष्य चारों ओर दूर दूर की वस्तुओं को भली प्रकार देख सकता है।

यूनान में संध्या तथा प्रातःकाल का प्रकाश नहीं होता है। वहां की बहुत सी सड़कें अब भी कच्ची तथा बिना प्रकाश के हैं। रात में सामने के मनुष्य का देखना भी दूभर हो जाता है इसलिये संध्या के समय यूनान के गावों में बड़ी सावधानी के साथ यात्रा करनी पड़ती है। जब तक तारागण आकाश में नहीं निकल आते हैं तब तक घोर अंधकार रहता है।

यूनान में सूर्य का प्रकाश बहुत तेज़ होता है। निचले ढालों तथा मैदान के पर्वतों पर ग्रीष्म काल बहुत बड़ा होता है और गरमी भी बहुत पड़ती है। मार्च तथा सितम्बर के बीच यूनान में बहुत कम बर्षा होती है। कभी कभी तो एक बूँद भी पानी नहीं बरसता है। उस समय नदियाँ सूख जाती हैं, घास का पता नहीं रह

जाता है और बहुत से फसल के पौदे भी सूख जाते हैं। यूनान में शीत काल में कुहरा बहुत पड़ता है परन्तु उससे कुछ हानि नहीं होती है। कभी कभी बरफ भी पड़ती है। ग्रीष्म काल के पश्चात् की ऋतु अच्छी होती है और उस समय यूनान में बर्षा होती है।

पर्वतों के ऊपर ग्रीष्म काल में भी बर्षा होती है। परन्तु उस समय किसान लोग पहाड़ों पर नहीं रहते जिससे वह अपने अंगूरों के वाटिकाओं की देख भाल कर सकें, फिर अधिक ऊँचे पर्वतों पर लोग निवास नहीं करते हैं क्योंकि वहाँ पर विशेष शीत पड़ती है और कभी कभी बरफ १५ जून तक जमी रहती है।
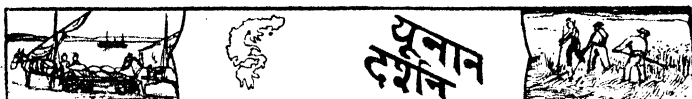
वर्तमान यूनान

वर्तमान यूनान एक समुद्री राज्य है। यह बाल्कन प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग है। इसके उत्तर में अल्बानिया यूगोस्लाविया और बल्गेरिया के राज्य हैं। दक्षिण-पश्चिम आयोनियन सागर और पूर्व की ओर एजियन सागर और टर्की हैं।

१९१२-१३ के बाल्कन युद्ध के पहले यूनान में केवल उत्तरी यूनान और पेलोपोनेसस का प्रान्त सम्मिलित था। युद्ध के अंत होने पर मैसीडोनिया एपीरस और क्रीट के प्रान्त यूनान में मिला दिये गये। १९१४ के महायुद्ध के पश्चात् थ्रेस का प्रान्त यूनान को मिला। यद्यपि १९१९-२२ में यूनानी सेना को एशिया माइनर की तुर्की सेना ने परास्त किया और यूनान को कुछ भाग खाली करना पड़ा तो भी पश्चिमी थ्रेस अब भी यूनान के अधिकार में है। यूनान का क्षेत्रफल लगभग ५४,००० वर्गमील है। इसमें यूनान का बाल्कन प्रायद्वीप का भाग, आयोनियन, एजियन और रूमसागर के द्वीप भी सम्मिलित हैं।

यूनान की जन-संख्या लगभग ६३ लाख है। गत महायुद्ध के पश्चात् १९२३ ई० में टर्की तथा यूनान के बीच संधि हुई जिसके अनुसार समस्त यूनानी तुर्क टर्की चले गये और कुछ यूनानियों को छोड़ कर सारे यूनानी टर्की राज्य छोड़ कर यूनान चले गये। इस प्रकार यूनान की जन-संख्या लगभग १५ लाख बढ़ गई है।
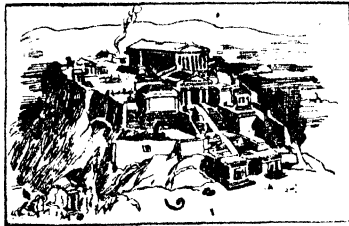
एथेन्स का आर्कोपोलिस

नये यूनानी लोग जो दूसरे देशों से आये वह मेसिडोनिया और पश्चिमी थ्रेस में बस गये। क्योंकि यही भाग बलगेरिया और टर्की ने खाली किये थे। नये यूनानियों में से जिन लोगों ने यूनान के प्रधान नगरों और बन्दरगाहों में काम करना आरम्भ किया यह

अनुमान लगाया गया है कि पिछले १० वर्षों में एथेन्स की जन-संख्या २,६३,००० से ४,५३,०००, प्रेयूस की १,३३,००० से २,५१,००० स्लोनीका की १,७०,००० से २,३६,०००, कवाला की २३,००० से ५०,००० और पतरस नगर को ५२,००० से ६१,००० बढ़ी है। इस वृद्धि के कारण यूनान नये रोज़गारों की ओर उन्नति कर रहा है।

वर्तमान यूनानी को इस बात का गर्व है कि वह हेलनी वंश का है। यूनानी लोगों की दिनचर्या संसार के और लोगों से कहीं अलग है।

यूनानी लोग बड़े चमकदार तथा चित्र सा भेष धारण करते हैं। वे अपनी कमर में घंघरी और उसके नीचे पायजामा या जांघिया पहिनते हैं। पैर में वे चमकीले लाल जूते पहिनते हैं जिनका अगला सिरा ऊपर की ओर मुँड़ा रहता है और उसके सिरे पर काला ऊन लगा रहता है। वह पूरी आस्तीन की कमीज़ अथवा कुर्ता पहिनते हैं। आस्तीन को दबाने के लिये उसके ऊपर चुनाव रहता है। कमर में वे चमड़े की पेटी बांधते हैं। पेटी के सामने की ओर एक थैली बँधी रहती है।

इस थैली में कुछ रोटी, रुमाल और कुछ रुपया यूनानी लोग रखते हैं। थैली में अथवा थैली के समीप ही वह अपना खड्ग कोष रखते हैं जिसमें उनका चाकू रहता है। अपने कुर्ते के ऊपर ग्रीक लोग एक प्रकार का कपड़ा पहिनते हैं जिसके ऊपर खुली आस्तीन का बेलबूटेदार कपड़ा रहता है। वे सिर पर लाल टोपी लगाते हैं। टोपी की शिखा एक लम्बा रेशमी गुच्छा रहता है जो एक ओर को लटकता है। बूढ़े, युवक सभी इस प्रकार का भेष धारण करते हैं।

देहात के पहिनाव में कहीं कहीं अन्तर रहता है जैसे बहुत से देहाती यूनानी टोपी के स्थान पर तिनकों या घास की बनी हैट पहिनते हैं या चमकीली रंगीन रूमाल बांधते हैं। कुछ पैर में मोज़ा पहिनना पसंद करते हैं और कुछ पट्टी बाँधते हैं जो नीचे और ऊपर गुच्छेदार बंधनों से बंधी रहती हैं। देहाती लोगों के कोट का रंग आसमानी नीला होता है। यूनानी लोगों के कपड़े चुनाव-दार सिलते हैं और उनमें सिलाई की पंक्तियाँ बहुत होती हैं।

अधिकांश देहाती यूनानी स्त्रियाँ मामूली चोली
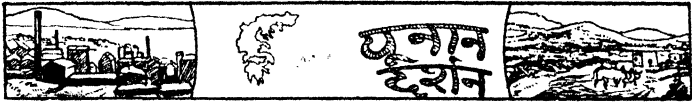
पहिनती हैं जो ब्लाउज़ की तरह होती है। वे देखने में अधिक सुन्दर नहीं होती हैं। यूनानी स्त्रियां नदियों में कपड़े साफ करती हैं। सड़कों पर पत्थर तोड़ती हैं अथवा खच्चरों पर फल लादकर बाज़ार जाती हैं। यह बड़ी सुडौल तथा गठीली होती हैं और बड़ी बहादुर होती हैं।

यूनानी पुजारी लोग (पादरी) काला गाउन, बिना किनारे की हैट और अपनी राष्ट्रीय पहिनाव पहिनते हैं। वे लम्बे बाल रखते हैं।

यूनानी बच्चे चमकीले तथा दिखावटी कपड़े नहीं पहिनते हैं। आमोद प्रमोद के समय लड़कियां राष्ट्रीय भेष तथा लड़के भांड का भेष धारण करते हैं। मामूली तौर पर लड़के सूती चेक के सूट तथा लड़कियाँ फ्राक पहिनती हैं। ग़रीब यूनानी बच्चे अपनी भेड़ों और खच्चरों को चराते रहते हैं।

धनी सौदागर, दूकानदार और नौकरी पेशा वाले लोग बिलकुल पश्चिमी सभ्यता के मानने वाले हो गये हैं। एथेन्स की धनी स्त्रियां आधुनिक पर्शियन पहिनावे की प्रेमी हो रही हैं।

देश दर्शन

वर्तमान समय में यूनान के अधिकतर निवासी यूनानी हैं। केवल कुछ ज़िलों में विदेशी लोग रहते हैं। विदेशी लोगों की संख्या यूनानी लोगों का केवल एक भाग मात्र है। पश्चिमी थ्रेस में कुछ तुर्क, कोर्फू की दूसरी ओर एड्रियाटिक तट पर कुछ अल्बानी मुसलमान रहते हैं। स्लोनीका में स्पैनो भाषा बोलने वाले यहूदियों की संख्या कुछ अधिक है। मेसिडोनिया में कुछ बलगेरिया निवासी रहते हैं। टर्की से आरमीनिया के निवासी आकर यूनान में बस गये हैं।
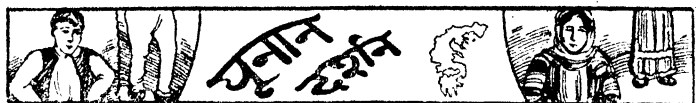
रीति-रिवाज

यूनानी लोग अपने अतिथि-सत्कार तथा शिष्टता के लिये प्रसिद्ध हैं। यूनान में विदेशी यात्री का सत्कार सब कहीं होता है। वह किसी भी यूनानी के द्वार पर प्रसन्नता पूर्वक ठहर सकता है। कहीं कहीं पर अवश्य कुछ कठिनाई पड़ती है।

अब से लगभग बीस या पचीस साल पहले लोग यूनान का भ्रमण केवल वहां की प्राचीन वस्तुओं के देखने के ध्यान से करते थे। भ्रमण करने वाले अपने साथ साथ प्रदर्शक भी रखते थे इसलिये उन्हें सच्चा ज्ञान यूनानी लोगों का हो ही नहीं सकता था। जब तक हम किसी देश के साधारण स्थानों, लोगों और वस्तुओं का अध्ययन न करें हमें वहां की दशा का सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता है।

यूनानी लोग परदेशी को देख कर बड़े प्रसन्न होते हैं। वे उसके साथ बड़ी सभ्यता दिखाते हैं। उसे बिना मांगे ही खाना पानी देने की इच्छा करते हैं। रेल पर यात्रा करते समय भी जब यूनानी लोग विदेशी लोगों

से मिलते हैं तो उनसे उनके बारे में सैकड़ों प्रश्न मित्रता के रूप में करते हैं और उनकी सहायता करने पर तत्पर रहते हैं। गाँवों में भी गाँव वाले परदेशी की बड़ी खातिर करते हैं। वे फल, लोयुकोयुमी (एक प्रकार की मिठाई) मस्टिचा (मदिरा जो पानी डालने पर दूध की भांति श्वेत हो जाती है) आदि अपना राष्ट्रीय भोजन अतिथि को खिलाते हैं।

नगरों में भी लोग अतिथों के साथ शिष्टता का व्योहार करते हैं। होटलों, भोजनालयों के अन्दर विदेशी लोग मनमानी अजनबी मिठाइयों तथा दूसरे पदार्थों को चख सकते हैं। चखने पर किसी वस्तु का खरीदना आवश्यक नहीं होता है। न खरीदने पर दूकानदार रुष्ट भी नहीं होता है। दूकानों पर लोग दूकानदारी की अपेक्षा अतिथि-सत्कार अधिक करते हैं परन्तु कभी कभी मक्खन तथा मछली के खरीदने में धोका हो जाता है।

यूनानी लोग बड़े चतुर व्यापारिक होते हैं। वे सौदा करने में बड़े जानकार होते हैं और सीरिया निवासी
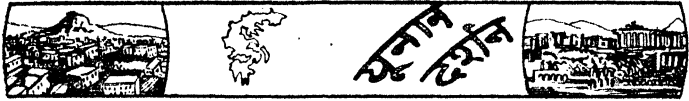
तथा यहूदियों को छोड़ कर कोई भी विदेशी सौदा करने में उनसे पार नहीं पा सकता है।

व्यापार करने के कारण यूनान में केवल व्यापारिक जाति ही नहीं बन गई है वरन् वहाँ पर बहुत से धनी व्यापारिक हो गये हैं। व्यापारिक लोगों में से बहुत से लोग ऐसे हैं जो वर्तमान यूनान के उच्च तथा सब से अधिक विद्वान और सभ्य लोगों में गिने जाते हैं। व्यापार में चाहे जो सफलता यूनानियों को प्राप्त हो पर वे अपना अतिथि-सत्कार नहीं छोड़ते हैं।

यदि कोई विदेशी किसी भी उच्च पद वाले यूनानी के पास कोई जान पहिचान का पत्र लेकर मिले तो वह शीघ्र ही उच्च श्रेणी के सभी लोगों से मिल लेगा। इसका मुख्य कारण यह है कि वह पहले जिसके पास जान पहचान का पत्र लेकर मिलता है वह स्वयम् विदेशी को दूसरे बड़े लोगों तथा पदाधिकारियों में मिला देता है।

धन्यवाद आदि शिष्टाचार वाले कृतज्ञता के शब्दों का उत्तर यूनानी लोग बड़ी सुन्दरता के साथ देते हैं। जैसे यदि हम किसी यूनानी को अपने प्रति अच्छा कर्म

किये गये का धन्यवाद देते हैं तो वह धन्यवाद के उत्तर में कहते हैं कि "यह हमारा कर्तव्य है"।

प्रत्येक यूनानी बच्चे को पाठशाला में शिक्षा के लिये जाना पड़ता है। यूनान में ४ साल से १४ साल के बच्चों के लिये मुफ्त शिक्षा प्रदान की जाती है। प्रायमरी पाठशालाओं के सिवा उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिये बड़ी पाठशालायें, कालेज आदि हैं। लड़कियों और लड़कों को उच्च शिक्षा देने के लिये अलग अलग प्रबन्ध है। एथेन्स और एलोनीका नगरों में विश्वविद्यालय हैं। एथेन्स का विश्वविद्यालय १८३७ ई० में और स्लोनीका का १९२५ ई० में स्थापित हुआ था। शिक्षा देने का ढंग इतना सुन्दर है कि दरिद्र से दरिद्र विद्यार्थी अपनी योग्यता तथा इच्छानुसार शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

प्रत्येक श्रेणी के यूनानी लोग अपने हाथ में सुमिरनी (माला) लिये रहते हैं। यह छोटी बड़ी कई प्रकार की होती है। सुमिरनी की गुरिया भी कई तरह की होती है। गरीब लोग सस्ती मालायें और धनी लोग कीमती मालायें रखते हैं। इन मालाओं से वे जाप

करते रहते हैं। वरन् यह खिलौने की भाँति उनके हाथों में रहते हैं। जहाँ कहीं भी वह बैठते, खड़े होते या बातें करते हैं उनकी उँगली माले पर चलती रहती है।

यूनानी लोग बड़े बातूनी होते हैं। यूनानी लोग सुवक्तृत्व के लिये प्रसिद्ध हैं। वह जन्म से ही श्रेष्ठ वक्ता होते हैं। वे जब कभी भी बातें करने का मौका पाते हैं तो कभी नहीं चूकते। राजनीति यूनानी लोगों के बात-चीत का मुख्य विषय होता है। वे मुनक्का, किशमिश और तम्बाकू के विषय में भी अधिक बातचीत करते हैं क्योंकि यह उनके राष्ट्रीय तथा निजी धन के उत्पन्न करने वाले हैं। कहवाघरों, होटलों और दूसरे बैठने वाले स्थानों पर लोग एकत्रित होते हैं और अपने देश की उन्नति तथा उपज की उन्नति के बारे में बात चीत करते हैं। यूनानी लोग एक प्रकार का हुक्का पीते हैं। वे दैनिक पत्रों के पढ़ने के बड़े प्रेमी होते हैं प्रत्येक यूनानी कोई न कोई पत्र आद्योपान्त अवश्य पढ़ता है। वे लोग मेज़ के चारों ओर बैठे कहवा, चाय, मस्टिचा (एक श्वेत मदिरा) पीते जाते हैं और वादाविवाद करते जाते हैं। हुक्का पीने वाला हुक्का पीते पीते ऊँघता हुआ

सोता सा प्रतीत होता है परन्तु सुनते सुनते वह छलांग मार कर बातूनी लोगों के समूह में पहुँच जाता है। और बड़ी गर्मी के साथ बातचीत में भाग लेने लग जाता है। देहाती लोग अंगूर से अपनी मदिरा तयार करते हैं जो उनके बागों में पैदा होती है। इसलिये उन्हें किसी प्रकार का खर्च मदिरा के लिये नहीं करना पड़ता है। जो लोग मदिरा तयार नहीं करते हैं वे मदिरा खरीद लेते हैं। यूनान में अंगूर बहुत होता है इसलिये मदिरा बहुत सस्ती बिकती है। केवल कुछ आनों में ही एक बोतल मिल जाती है। जिस प्रकार हमारे देश में बालकों को गिलास भर कर पानी अथवा दूध पीने को दिया जाता है उसी प्रकार यूनान में बच्चों को मदिरा पिलाई जाती है। परन्तु इससे यह न सोचना चाहिये कि यूनानी लोग बड़े पियक्कड़ (शराब पीने वाले) होते हैं। वह मदिरा के साथ पानी मिला कर पान करते हैं। इस कारण वह कभी नशे में चूर नहीं होते हैं।

यूनानी लोग सदैव तारपीन की शराब तथा शर्बत की तरह गाढ़ी कहवा का प्रयोग करते हैं। यूनान
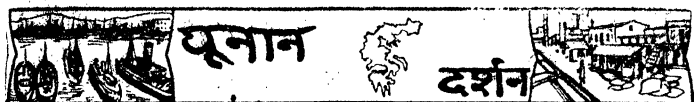
(खासकर एथेन्स) में स्वच्छ पानी का मिलना बड़ा कठिन है। अमरावसी पर्वत एथेन्स से १० या १२ मील की दूरी पर है। खरीदने पर भी स्वच्छ पानी का मिलना बहुत कठिन हो जाता है। जब तक स्वच्छ पानी रखने वाले को खरीदने वाला स्वयम् न जानता हो।

परन्तु अब एथेन्स में स्वच्छ पानी मिलने का प्रबन्ध कर दिया गया है। इसलिये अब वहां स्वच्छ पानी सरलता पूर्वक मिल सकता है। यह पानी मराथोन के समीप दो नदियों में बांध बना कर रोका गया है और एक नौ मील लम्बी सुरंग द्वारा एथेन्स लाया गया है।

यूनानी लोग भोजन के पहिले पान करते हैं। गरीब लोगों की शराब ही उनका मुख्य भोजन है। वे मोटी मक्का आदि की रोटी का प्रयोग करते हैं। वे बकरी के मक्खन, सेम और जैतून का भी भोजन में प्रयोग करते हैं। कभी कभी उन्हें लब्राडोर की काड मछली खाने को मिल जाती है। किसी किसी को तो साल में केवल कुछ ही दिनों मास खाने को मिलता है। नगरों में रिस्टोरेन्ट तथा होटल बहुत होते हैं। उनके सामने चबूतरों, बराम्दों और बागों में मेज़ लगे रहते

हैं वहीं लोग जाकर भोजन करते हैं। बड़े नगरों में भोजन अच्छा फ्रांसीसी ढंग का मिल सकता है। यूनानी शोर्वे में नींबू और अंडा अवश्य मिलाया जाता है। वे चावल का गुलगुला बनाते हैं परन्तु उसमें मांस का प्रयोग नहीं करते हैं।

उपज

यूनान की मुख्य उपज

यूनान एक कृषि प्रधान देश है। दो तिहाई से अधिक लोग खेती पर अपना जीवन चलाते हैं। अधिकांश संख्या छोटे छोटे किसानों की है जो अपने परिवार की सहायता से खेती करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में यूनान को खेती से अधिक लाभ हुआ है। इसका मुख्य कारण यह है कि जो लोग टर्की और बलगेरिया से आकर मेसिडोनिया और पश्चिमी थ्रेस में आकर बसे उन्होंने वहाँ तम्बाकू की खेती करना आरम्भ किया। अपने कठिन परिश्रम से उन्होंने तम्बाकू की बहुत अच्छी फसलें तयार किया जिससे यूनान-निर्यात में तम्बाकू का प्रथम स्थान हो गया है। अब तम्बाकू की उपज यूनान के उन भागों में भी की जाने लगी है जहाँ तम्बाकू की खेती कभी भी नहीं होती थी।

करैन्ट (किशमिश) एक प्रकार के सूखे अंगूर को कहते हैं जिसमें बीज नहीं होता है। इसका पौदा पहिले-पहल कोरिंथ के आस पास यूनान में पाया गया था। इसकी पहचान दूसरे अंगूरों से करने के लिये इसको

कोरिंकथ्स कहते थे। १८१६ ई० में सर्व प्रथम यह यूनान से बाहर भेजा गया।

उसके पश्चात् संसार भर में केवल यूनान में किशमिश (करैंट) की उपज की गई। यूनान की भाँति दूसरे राष्ट्रों ने किशमिश उगाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई। इसलिये यूनान से संसार के समस्त राष्ट्रों को किशमिश भेजी जाती थी। १८८३ ई० में पौदा आस्ट्रेलिया में उगाया गया। पहिले इस पौदे के उगाने में सफलता नहीं हुई परन्तु धीरे धीरे लोगों को उनके परिश्रम का फल मिला और वहाँ किशमिश की उपज होने लगी। १९२० ई० में आस्ट्रेलिया से किशमिश निर्यात होने लगी। १९२६-२७ ई० में आस्ट्रेलिया में ११,००० टन किशमिश की उपज हुई। उस समय यूनान ९०,००० टन प्रति वर्ष के हिसाब से निर्यात किया करता था।

आज भी यूनान संसार का सबसे बड़ा किशमिश की उपज करने वाला राष्ट्र है। परन्तु किशमिश का निर्यात तम्बाकू से कम है।

किशमिश के बगीचे यूनान के दक्षिण में हैं। कोरिंथ

से कलामना तट तक और जेन्ते और सेफालोनिया के द्वीपों में इसकी वाटिकाएँ फैली हुई हैं। अंगूर की उपज बहुत होती है परन्तु उसके उगाने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है।

जनवरी के महीने में अंगूर तराशे जाते हैं। फरवरी के महीने में अंगूर के बागों की गोड़ाई होती है और बागों की मिट्टी के ढेर लगा दिये जाते हैं। प्रत्येक अंगूर के पेड़ के चारों ओर गड्ढा खोद दिया जाता है जिससे वर्षा का पानी उसमें भली भांति एकत्रित हो सके।

मार्च में अंगूरों के वाटिका की मिट्टी बराबर की जाती है। पेरोनोसपोरोस तथा आइडियम नामक दो छोटे कीड़े अंगूर के प्रधान बैरी हैं। पेरेनोसपोरोस कीड़े से बचाने के लिये तांबा, नींबू और गन्धक के मिश्रित पदार्थ का प्रयोग किया जाता है। आइडियम कीड़े से बचाने के लिये उनमें गन्धक डाली जाती है।

जब गन्धक डाली जाती है तो अंगूर की वाटिकाएं देखने में बहुत खराब प्रतीत होने लगती हैं। कुछ लोग धौंकनी लेकर धौंकनी को धौंकते चलते हैं और धौंकनी से अंगूर के ऊपर गन्धक के फुहारे गिराते जाते हैं।

जब फल लग जाते हैं तो मुंदरी काटी जाती हैं। अंगूर के वृत्तों के तने में छाल को गोलाकार (मुंदरी को तरह) कहीं कहीं छील दिया जाता है जिससे रस नीचे को ओर न आ सके। ऐसा करने से फलों की ओर रस फेंका जाता है।

भँवरी काटने के पश्चात् अंगूर की पत्तियों को कम करना पड़ता है क्योंकि जब तक अंगूर हरी पत्तियों के मध्य छिपे रहते हैं तब तक तेज धूप में भी उनका पकना कठिन हो जाता है। अंगूर के पौदे झाड़ियों की भांति होते हैं। यह अधिक से अधिक ३ फुट ऊँचे होते हैं कोई कोई पौदा तो केवल १० इंच का ही होता है। जब यह पौदे अंगूरों के गुच्छों से लद जाते हैं तो पौदे उनका भार नहीं संभाल सकते हैं इस लिये उनकी सहायता के लिये पौदे के चारों छड़ियां गाड़ दी जाती हैं।

जुलाई के अंत में अँगूर के बाग़ पक कर तयार हो जाते हैं। उसके पश्चात् उनका चुनना आरम्भ होता है।

अगूरों को चुनने वाले मज़दूर जत्थे बना बना कर अपने मुखिया के साथ किसी केन्द्रीय स्थान पर इकट्ठा

होते हैं। वहीं पर मज़दूरों को खोजने के लिये अंगूर के कृषक लोग आते हैं और मज़दूरों के जत्थों को अंगूर चुनने के लिये ले जाते हैं। छोटे किसान अपने बागों के अंगूर अपने परिवार की सहायता से ही चुन लेते हैं। अंगूर चुनने के लिये भी चतुर मज़दूर की आवश्यकता होती है जिससे पके हुये अंगूर चुनने से बच कर न रह जावें या कच्चे न तोड़ लिये जाँय इसी कारण बड़े बड़े किसान मज़दूर लड़कों को नौकरी नहीं देते हैं। अंगूर की चुनाई दो तीन बार होती है।

पहली अगस्त से अंगूर की चुनाई का कार्य आरम्भ होता है। अंगूर चुन कर टोकरियों में रखा जाता है। टोकरियां उठाकर अंगूर सुखाने वाले स्थान पर लाई जाती हैं। सूखने पर उनका रंग गहरा नीला हो जाता है। अंगूर लकड़ी के बर्तनों अथवा साफ भूमि के ऊपर सूखने के लिये डाल दिये जाते हैं और सूर्य की धूप में सूखते हैं।

रात के समय लकड़ी के बर्तन एक दूसरे पर तह कर के रख दिये जाते हैं और उनपर एक कपड़ा डाल

दिया जाता है जिसके वर्षा होने पर सूखते हुये किशमिश भीग न सकें।

भूमि पर अंगूर सूखने के लिये लम्बी पतली पंक्तियों में डाला जाता है। रात के समय इन पंक्तियों पर कनवस का यह ढक्कन भूमि से कुछ इंच ऊपर एक गड़े हुये लट्ठे से लगा रहता है। रात के समय यह कनवस छोटे छोटे डेरों की भाँति दिखाई पड़ते हैं।

अच्छी ऋतु में फल लगभग ८ दिन में सूख जाते हैं। डण्ठल से अलग करने के लिये किशमिश को छोटे झाड़ू से पीटा जाता है। पीटने के पश्चात् उन्हें हवा से साफ किया जाता है।

यूनान में फसल के दिनों में १४ घंटे का दिन होता है। १४ घंटे तक मज़दूरों को बागीचों में रहना पड़ता है परन्तु मध्यान्ह के समय तीन घंटे की छुट्टी होती है। है। उस समय इतनी तेज धूप तथा गर्मी रहती है कि काम करना दुर्लभ हो जाता है। खेत में मज़दूर सूखी रोटी, फल और थोड़ी सी मदिरा का भोजन करते हैं। १२ बजे दिन से ३ बजे दिन तक यूनान के बाज़ार गर्मी

तथा धूप के कारण बन्द रहते हैं। लोग अपने घरों के बाहर नहीं निकलते! हैं।

दिन भर काम करने के पश्चात् मज़दूर लोग एक दूसरे का हाथ पकड़ कर एक लम्बी पंक्ति बना कर अर्धवृत्त में नाचते हैं। नाच में पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी सम्मिलित होती हैं। वे नाचते समय घरेलू कहानियों को गाने के रूप में गाया करते हैं। नाचने के पश्चात् मज़दूर लोग जहां कहीं भी स्थान पा जाते हैं वहीं सो रहते हैं। उन्हें चारपाई विस्तर की आवश्यकता नहीं होती है।

जब फल सूख जाते हैं तो उनके बेचने की जल्दी होती है क्योंकि बाहर उनके रखने के लिये स्थान नहीं रहता है। प्रत्येक किसान अपना फल बेचने का इच्छुक होता है।

फलों को झाबों अथवा बोरों में भर कर खच्चर पर लाद कर बाज़ार में बेचने के लिये ले जाते हैं। एक खच्चर २०० से ३०० पौंड तक ले जा सकता है। किसानों के साथ उनके घर के प्राणी भी बाज़ार जाते हैं और लादने, उतारने तथा बेंचने में सहायता करते हैं।

अब गदहों तथा खच्चरों के स्थान पर फल मोटर लारियों द्वारा बाज़ार पहुँचाया जाता है।

देश दर्शन

कुछ लोग सीधे व्यापारियों से बातचीत करके अपना सौदा बेचते हैं और कुछ लोग मध्यस्थ को डाल कर सौदा तै करते हैं। कोरिंथ, ओस्टीटज़ा और पतरस के समुद्री घाटों पर किशमिश विदेश भेजने के लिये इकट्ठा किया जाता है। कुछ किशमिश प्रान्तीय बन्दरगाहों से निर्यात के केन्द्रों पर सुन्दर चमकदार बोटों पर लाद कर भेजा जाता है। दूर दूर से फल ऊँट गाड़ियों पर लद कर आता है। ऊँट गाड़ी भी सुन्दर चित्र सी रँगी रहती है। अब अधिकांश काम मोटर लारियों से लिया जाता है।

किशमिश जब बन्दरगाहों पर लाई जाती है तो घाटों पर और गोदामों के भीतर, ऊपर, चारों ओर किशमिश ही किशमिश दिखाई पड़ती है। पुरुष, स्त्रियां और बच्चों के समूह कुछ न कुछ काम करते हुये दिखाई पड़ते हैं। किशमिश मशीन द्वारा चलनी में चाली जाती है। चाल कर उसे साफ करते हैं और उसे तीन भागों में छोटाई बड़ाई के अनुसार छांटते हैं। सबसे छोटी और खराब किशमिश रोटी बनाने के काम आती है। अच्छी किशमिश तौल कर डिब्बों में बांधी जाती है और बाहर भेजी जाती है।
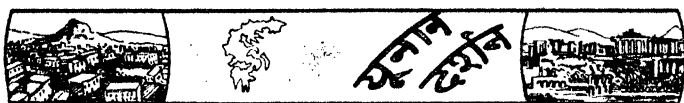
कुछ चलताऊ करैंट बनाई जाती है और वह लकड़ी के सन्दूकों में भर कर इंगलैंड आदि देशों को भेजी जाती है।

कुछ स्थानों में किशमिश की सफाई के लिये निजी मशीनें होती हैं। सूखने पर यह वहीं साफ कर ली जाती हैं उसके पश्चात् बन्दरगाह पर बाहर भेजने के लिये लाई जाती हैं।

यूनान में करैंट का प्रयोग भोजन में कम होता है। आस्ट्रेलिया में उपज होने के कारण यूनान को इसकी उपज करने तथा साफ करके बाहर भेजने में बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। यूनान सरकार किसानों की सहायता करती है जिससे वह अच्छी से अच्छी उपज तयार कर सकें। यूनान के कार्यकर्ता अपने देश की किशमिश की खपत के लिये दूसरे देशों में बड़ा प्रचार करते हैं। जब आस्ट्रेलिया में इसकी उपज नहीं होती थी तब यूनान में इसकी उपज इतनी अधिक होती थी कि संसार भर में उसकी खपत नहीं हो सकती थी।

देश दर्शन

यूनान के त्योहार

न्यू इयर (साल का प्रथम दिवस) स्वतंत्रता दिवस (२५ मार्च) और ईस्टर के उपलक्ष में यूनानी लोग आनन्द पूर्वक अपने त्योहार मनाते हैं। यह यूनानी जाति के राष्ट्रीय त्योहार हैं।

एथेन्स में राष्ट्रीय त्योहारों के समय लोग सुन्दर वस्त्र पहिनते हैं। ऐसे अवसरों पर विदेशी सभ्यता को त्याग कर एथेन्स निवासी अपनी सभ्यता के अनुसार काय करते हैं। ऐसे अवसरों पर यूनानी बच्चे राष्ट्रीय भेष में रहते हैं और उनकी दाई भी अपने देशी भेष में दिखाई पड़ती हैं। यूनानी त्योहारों में ऊँट बड़ा ही अच्छा तथा शुभ जानवर माना जाता है। त्योहारों के समय उसे देख कर बच्चे बड़े प्रसन्न होते हैं। जब बच्चे उसे देखते हैं तो मारे खुशी के वह लोग गाने लगते हैं "ओ ऊँट तुम नाचो हम तुम्हें सेव देंगे" बच्चे ऊँट पर पैसे भी चढ़ाते है।

एथेन्स के समीप मेगारा है। वहाँ पर पहाड़ी के ऊपर और बाज़ार में ईस्टर के अवसर पर प्रत्येक मङ्गलवार
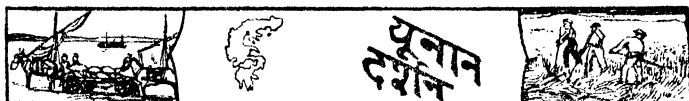
को नाच होता है। वहाँ का नाच बड़ा प्रसिद्ध है। मेगारा के निवासी नाचने में बड़े चतुर होते हैं। वे नाचने का पेशा करते हैं। मेगारा निवासियों का नाच उसी प्रकार का होता है जैसा कि किशमिश चुनने वाले लोग दिन के समाप्त होने पर नाचते हैं।

ईस्टर ट्यूज़डे (मङ्गलवार) के दिन मेगारा की लड़कियां जो विवाह के योग्य हो जाती हैं वह नाचती हैं और अपने लिये पति तलाश करती हैं। वह नाचने के लिये सुन्दर भेष धारण करती हैं। वह सोने का काम किया हुआ घूंघट लगाती हैं और सोने की बड़ी ठोस जंजीर गले में पहिनती तथा बाल में लगाती हैं। प्रत्येक युवती ऐसा ही भेष धारण करती है चाहे उसकी सुन्दरता जैसी भी हो। सोने की यह जंजीर पुश्त दर पुश्त चलती है। माता इसे अपनी पुत्री को देती है और वह फिर माता बनने पर पुत्री को देती है इसी प्रकार वह चलती रहती है। समय समय पर रुपया लगा कर दूसरे सुनहले आभूषण भी बनवाये जाते हैं।

जब लड़कियों का नाच होने लगता है तो पुरुष उन्हें बड़े ध्यान से देखते रहते हैं कि किस युवती की

ओर उनका ध्यान आकर्षित होता है। यदि कोई पुरुष उसी समय किसी युवती से ब्याह करने के लिये तय करता है तो वह अपनी रूमाल उसके ऊपर फेंक देता है। जिस लड़की पर रूमाल फेंका जाता है उसे नियमानुसार फेंकने वाले पुरुष के साथ ब्याह करना ही पड़ता है।

मेगारा की लड़कियों को शिक्षा के रूप में मैटिंग-डान्स (चटाई का नाच) सिखाया जाता है। स्कूल के अन्दर लड़कियों को नाचना सिखाया जाता है। नाचना स्कूल करीक्युलम के अन्दर शामिल होता है। यूनानी नाच सिखाने के लिये योग्य नृत्य-कला के ज्ञानी अध्यापक रक्खे जाते हैं। स्कूल में खेलने के मैदान में लड़कियों को नाच सिखाया जाता है। उस समय कई लड़कियाँ एक साथ नाचती हैं। लड़कियों के पैर तथा शब्द एक साथ झंकार पैदा करते हैं। उनके अन्दर किञ्चित् मात्र भी अन्तर पड़ता हुआ दिखाई नहीं पड़ता है। परन्तु वह किसी प्रकार का पोज़ (ढंग, अदा, कला) नहीं दिखा सकतीं जिससे प्रतीत होता है कि उनका नाच जीवन के आनन्द को प्रकट करने वाला नहीं होता है।
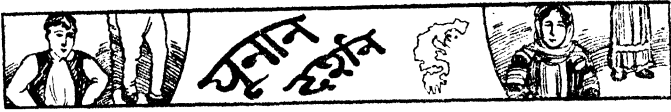
नाच समाप्त होने पर सभी लड़कियाँ तथा दर्शक लोग विलाप जुलूस बना कर कार्य समाप्त करते हैं। यूनानी नाच का यह एक नियम है परन्तु ऐसे समय भी नाचने वालों के पैर बड़े हलके पड़ते हैं और मालूम होता है कि उनके पैर फिसल रहे हैं। यह उनके चलने की एक निराली कला होती है।

आवागमन के साधन

अब से लगभग ३० साल पहले यूनान में कोई भी ऐसी रेलवे न थी जो उसे योरुप के दूसरे देशों से मिलाती रही हो। इसलिये यूनान केवल समुद्री मार्ग से ही पहुँचना होता था।

यद्यपि एथेन्स से यूनान प्रायद्वीप के भिन्न भिन्न भागों को रेलवे बनी थीं तो भी उन पर बहुत कम रेलगाड़ियाँ चलती थीं। स्टेशनों पर रात दिन (चौबीस घंटे) में केवल एक बार ही रेलगाड़ी मिल सकती थी। इसलिये यूनान के यात्रियों को गाड़ी पकड़ने के लिये बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था। रेलगाड़ियों का समय या तो सवेरे तड़के होता था या दोपहर के समय होता था।

सवारी गाड़ियों में अधिकांश सैनिक लोग या सौदागर लोग यात्रा करते थे। किसी भी गाड़ी के अन्दर बाज़ार में बेंचने के लिये सामान ले जाने वालों की भीड़ लगी रहती थी। वह लोग अपने साथ भांति भांति के फल बोझों में बांध कर ले जाते थे। मालगाड़ी तथा सवारी गाड़ी में अधिक अन्तर नहीं

होता था। चिड़ियाँ अधिकांश संख्या में रहती थीं। चिड़ियों के पैर एक साथ बांध कर उन्हें बैठने वाले स्थानों के ऊपर वाले स्थानों में या सीट के नीचे लोग रखते थे। यात्री को सीट के नीचे भी पैर फैलाने को स्थान नहीं बाकी रहता था। यदि कोई भूल कर पैर फैला देता था तो उसके पैर में शीघ्र ही चिड़ियाँ चोंच से ठोकर लगाती थीं जिससे यात्री का साहस फिर पैर फैलाने का हो ही नहीं सकता था। तीसरे दर्जे के सिवा दूसरे दर्जे के डिब्बे भी सवारी गाड़ियों में हुआ करते थे, परन्तु उनमें बड़े तथा धनी लोग ही यात्रा करते थे। रेल के डिब्बे बड़े होते थे। एक डिब्बा दूसरे डिब्बे से खुले द्वारों से मिला रहता था इसलिये एक डिब्बे का यात्री दूसरे डिब्बे में बैठे हुए अपने मित्र के साथ ऊँची आवाज़ में भली भांति बातें कर सकता था। उस समय यूनान की रेलगाड़ियों में ५ या ६ घंटे यात्रा करने में मनुष्य का चित्त घबड़ा उठता था।

यूनान निवासी स्वभाव के बड़े अच्छे होते हैं। विदेशी लोगों का वह बड़ा सत्कार करते हैं। रेलगाड़ी के डिब्बों में वह अपने फल आदि उसे स्वयं बिना मांगे

खाने के लिये देते हैं और मित्रता का भाव दिखाते तथा बातचीत करते हैं। वह किसी प्रकार की भी सहायता करने के लिये शीघ्र ही अपनी हानि करके भी तयार हो जाते हैं। सो जाने पर वह जगा कर पूछते हैं कि यात्री को कहाँ उतरना है और उतरने के स्टेशन में पहुँचने पर सहायता देकर उतार देते हैं। गाड़ियों पर जो सैनिक यात्रा करते हैं वह भो बड़े सहनशील होते हैं। वह किसी प्रकार का कड़ापन नहीं दिखाते हैं। उनका भाव बिलकुल स्वयंसेवक लोगों की भांति होता है।

पिछले कई वर्षों से यूनान में यात्रा करने तथा वहाँ जाने आने के साधनों में उन्नति की जा रही है। अब सुगमता पूर्वक यूनान के अन्दर जल अथवा स्थल मार्गों द्वारा यात्रा की जा सकती है। अब यूनान रेलों द्वारा योरुप के दूसरे देशों से मिला दिया गया है। एक्सप्रेस गाड़ियाँ चलने लगी हैं जिनमें प्रत्येक भाँति के आधुनिक प्रबन्ध हैं। पेरिस से एथेन्स को एक्सप्रेस आती जाती हैं।

यूनान तथा समीपवर्ती पूर्वी देशों की यात्रा करने के लिये योरुपीय लोगों की सरलता के लिये सुन्दर
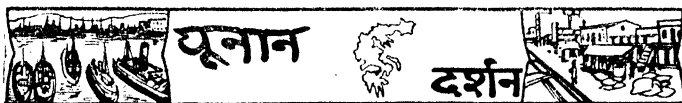
लाइनर जहाज चलने लगे हैं। इन जहाजों में यात्रियों के सुविधा के लिये अच्छा प्रबन्ध रहता है।

एथेन्स में रेल द्वारा यात्री जा सकता है। यदि वह जल मार्ग से जाना चाहता है तो उसे पहले पिरेयूस जहाज द्वारा जाना पड़ता है उसके पश्चात् बिजली से चलने वाली गाड़ियों पर यात्रा करके वह एथेन्स पहुँच सकता है। एथेन्स में सुन्दर से सुन्दर प्रथम श्रेणी के होटल मिल सकते हैं। एथेन्स से समस्त यूनान देश का भ्रमण किया जा सकता है। वहां से यूनान के प्राचीन स्मृतियों, मन्दिरों की यात्रा बड़ी सुगमता से हो सकती है।

इल्यूसिस, मेगारा, कोरिंथ, ओलम्पिया, मेसेनी, अरगोस, टिरिन्स आदि ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा एथेन्स से रेल द्वारा की जा सकती है। यूनान में १७०० मील से अधिक रेलवे लाइन है। अब भी छोटे स्टेशनों पर गाड़ियां कम मिलती हैं और स्टेशन दूर दूर हैं तो भी सरलता पूर्वक प्रथम अथवा द्वितीय श्रेणी के डिब्बों में यात्रा की जा सकती है।

रेलवे लाइनों पर जहां कहीं भी ऐतिहासिक स्थान

हैं वहां छोटे स्टेशन बना दिये गये हैं। इन छोटे स्टेशनों पर प्लैटफार्म नहीं है। उतरने वालों को कूद कर गाड़ी से उतरना पड़ता है। गाड़ी केवल थोड़ी देर ठहरती है। स्टेशन केवल टीन के चद्दरों का एक छोटा शेड बना होता है इन स्टेशनों में एक स्टेशन मास्टर रहता है जो स्टेशन मास्टरी, बुकिंग क्लार्क, टिकट लेने वाले, माल लादने वाले क्लार्क, दरबान और बोझ ढोने आदि का काम करता है।

तटीय स्थानों तथा द्वीपों की यात्रा के लिये बोट तथा स्टीमर आते जाते रहते हैं। यदि पिरेयूस से एथेन्स की यात्रा स्टीमर द्वारा की जावे तो मार्ग में कोरिंथ नहर का सुन्दर दृश्य देखने को मिलता है। इस स्थल डमरू मध्य को काट कर नहर बनाने का काम नेरो राजा के समय में आरम्भ हुआ था परन्तु कुछ समय के पश्चात् यह काम बन्द कर दिया गया था। वर्तमान नहर का काम १८८१ ई० में एक फ्रांसीसी कम्पनी ने आरम्भ किया था। इस नहर को ६ अगस्त सन् १८९३ ई० को एक यूनानी कम्पनी ने बना कर तयार किया। यह नहर साढ़े तीन मील लम्बी १०० फुट
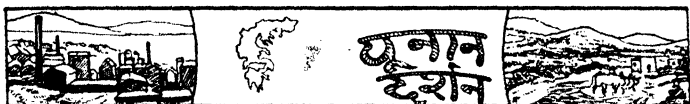
चौड़ी तथा २६ फुट गहरी है। नहर के दोनों ओर बाँध हैं। बांध की सबसे अधिक ऊँचाई १६० फुट है। जिस स्थान पर १६० फुट ऊँचाई है वहां पर रेलवे का एक पुल बना हुआ है।

यूनान में ६ हज़ार मील सड़क है। सड़कों द्वारा यूनान देश के सभी भाग एक दूसरे से मिले हुये हैं। जो सड़कें कम चालू हैं उनकी दशा अवश्य खराब है परन्तु चालू सड़कों की दशा अच्छी है। और उन पर मोटर लारियां आदि चला करती हैं। यूनान में अब प्राचीन सड़कों की मरम्मत तथा नई सड़कों के बनाने का काम बड़े ज़ोरों से हो रहा है। एक सड़क यूनान में ऐसी तयार की गई है कि जो ऊपर पहाड़ियों पर, और नीचे घाटियों में होकर जाती है। इस सड़क द्वारा यात्रा करने में वहां की अच्छी से अच्छी प्राकृतिक सुन्दरता की रूप रेखा का अच्छा अध्ययन किया जा सकता है।

गत महायुद्ध में जब मित्र सेना स्लोनीका पर अधिकार जमाये थी तो उसने सड़क बना ली थी अब वह सड़क वाले प्रान्त भी यूनान के अधिकार में हैं।

यूनान के अन्दर सड़कों को उन्नति देने के लिये

बड़े ज़ोरों के साथ कार्य हो रहा है। यूनान में यात्रियों की संख्या अधिक हो रही है। वहां लोग प्राचीन स्मृतियां, ऐतिहासिक स्थान तथा सुन्दर दृश्य देखने के लिये जाते हैं उन यात्रियों की सुगमता के लिये यूनान सरकार अधिक प्रयत्न कर रही है। नगरों की यात्रा के लिये बाहरी यात्रियों को पास्पोर्ट लेने अथवा बदलने की कठिनाई को दूर करने के लिये प्रयत्न किया जा रहा है। यूनान की रेलवे तथा जहाजी कम्पनियों ने २५ से अधिक एक साथ यात्रा करने वाले यात्रियों के लिये किराये में काफी कमी कर दिया है। मोटर चलाने वाली संस्था ने यात्रियों के लिये यह सुगमता कर दी है कि योरुप के दूसरे देशों की मोटर चलाने वाली संस्थाएँ अपनी मोटरें यूनान में बिना टैक्स के यात्रा के लिये ले जा सकती हैं।

मोटर चलने वाली सड़कों तथा समुद्री स्टीमरों की उन्नति होने के कारण यूनान हालो डे ग्राउन्ड (छुट्टियों का मैदान) बन रहा है। छुट्टियों के समय योरुपीय निवासी अपना समय आनन्दपूर्वक व्यतीत करने के लिये यूनान जाते हैं।

एथेन्स में आधे दिन, पूरे दिन तथा इससे अधिक समय की यात्रा के लिये मोटर किराये पर मिलते हैं। यदि हम आधे दिन के लिये मोटर किराये पर लेवें तो हम जैतून के बागों की सैर करते हुये प्राचीन पवित्र मार्ग होकर डाफनी घाट जा सकते हैं और वहाँ से एल्यूसिस के तटों का चक्कर काटते, एल्यूसीमा के अद्भुत वस्तुओं को देखते लौटती बार मराथोन के मैदान को भी देख सकते हैं। मराथोन के मैदान में यूनानी लोगों ने एक बड़ी विजय प्राप्त की थी जो संसार के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है। कोरिंथ की यात्रा एक दिन में की जा सकती है। इस यात्रा में डोरिक के मन्दिर देखे जा सकते हैं और भोजन आदि के लिये भी मार्ग में काफी समय मिल सकता है। यदि अपने यात्रा के समय को एक दिन से दो दिन के लिये बढ़ा दें तो लियोन द्वार, मिसेनी की समाधि और टिरिन्स साइक्लोपियन खँडहरों की यात्रा भली भांति कर सकते हैं।

यदि हम चाहें तो मोटर और रेलगाड़ी दोनों द्वारा यात्रा कर सकते हैं। नीचे एथेन्स से एक सप्ताह की

यात्रा का कार्यक्रम दिया जाता है जिससे यात्रियों को भली भांति सुविधा हो सकती है।

एथेन्स से कोरिन्थ रेल द्वारा यात्रा करने के पश्चात् वहां से प्राचीन कोरिंथ मोटर द्वारा जाकर फिर वापस आकर पतरस रेल द्वारा यात्रा हो सकती है। प्रथम रात्रि पतरस में व्यतीत करनी होगी। दूसरे दिन पतरस से ओलम्बिया रेल द्वारा जाकर वहां दूसरी और तीसरी रात व्यतीत करनी होगी जिससे २४ घंटे का समय देखने को मिलेगा। ओलम्बिया से पतरस फिर रेल द्वारा चौथे दिन वापस आकर पतरस में रात व्यतीत करनी होगी। पांचवें दिन नौपलिया जाना होगा। नौपलिया से मोटर द्वारा एपीडौरस जाकर छठवें दिन फिर वापस आकर नौपलिया में रात व्यतीत करनी होगी। सातवें दिन मोटर द्वारा टिरिन्स, अरगोस और मिसेनी पहुँच कर वहां से रेल द्वारा एथेन्स वापस आ जाना होगा।

बसंत और ग्रीष्म ऋतु में यूनान के बन्दरगाहों में जहाज यात्रा करने के लिये मिलते हैं यह जहाज तटों की यात्रा कराते हैं और भ्रमण के लिये काफी समय देते हैं।

जो लोग आधुनिक सवारियों का प्रयोग न कर के प्राचीन ढंग से अथवा पैदल चल कर यूनान के प्राचीन स्थानों का भ्रमण करते हैं वह भी अपना समय बड़े आनन्द पूर्वक काटते हैं। उन्हें मार्ग में ऐसे स्थान तथा दृश्य देखने को मिलते हैं कि उन्हें मार्ग के सारे संकट भूल जाते हैं। वे कहीं कहीं पर पहाड़ियों के ऊपर ऐसे प्राचीन स्थानों का अवलोकन करते हैं जहाँ अभी तक रेल अथवा सड़क नहीं पहुँच सकी है। इस प्रकार यूनान की यात्रा में यात्री को हार्दिक आनन्द प्राप्त होता है।

प्राचीन नगर

एथेन्स नगर

बर्तमान एथेन्स नगर ऐटिक के मैदान में स्थित है। यह एक सुन्दर नगर है। यह योरुप के समीपवर्ती पूर्वी
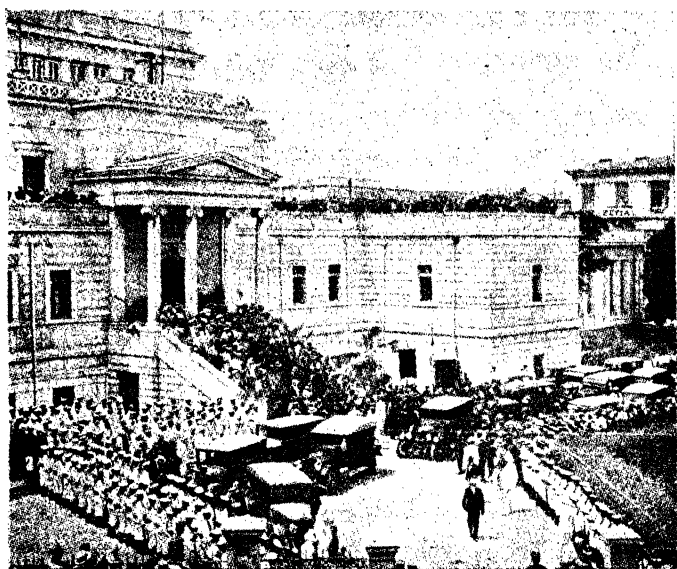
यूनानी पार्लियामेन्ट का प्रथम बैठक के पश्चात् १८२६ ई० का दृश्य

राष्ट्रों का पेरिस कहलाता है। एथेन्स चारों ओर बैंजनी रंग की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह पहाड़ियां

हिमेटस, पेनटेलिकस, पारनेस, ऐगोलिओस और कोरी डलासे की हैं। पेनटेलिकस पहाड़ी में पेलटेलिक संगमरमर पाया जाता है। एथेन्स नगर के घेरे वाले वृत की पूर्ति एजिना की खाड़ी करती है। इस खाड़ी में पिरेयूस का बन्दरगाह है। ऐथेन्स की जन-संख्या अब लगभग १० लाख है।

यूनानी लोग आर्थोडाक्स (प्राचीन) चर्च के मानने वाले हैं। उनका अपना अलग पूर्ति पञ्चांग था परन्तु अब वह ग्रेगोरियन पञ्चांग को मानने लगे हैं। यूनान की जलवायु अच्छी है और वहां की यात्रा का सबसे अच्छा समय वसंत काल का होता है। परन्तु अब लोग साल भर ऐथेन्स नगर को देखने के लिये जाते हैं और वहां वर्षा ऋतु में भी निवास करते हैं। ग्रीष्म काल में एथेन्स के निवासी रेस्टोरेंट में भोजन करने के आदी बन गये हैं।

ऐक्रोपोलिश (किलेबन्दी वाला नगर) एथेन्स के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। जैसे ही स्टीमर पिरेयूस बन्दर के समीप पहुँचता है वैसे ही वहां की पहाड़ियां दिखाई पड़ने लगती हैं। ऐक्रोपोलिस का क्षेत्रफल

६८,४०० वर्ग फुट है। यह समुद्र के धरातलसे ५१ फुट ऊँचा है।

ऐक्रोपोलिस के प्रदेश द्वार के समीप बाईं ओर एक चबूतरे पर मारकस विस्पानियस—ऐग्रीया की मूर्ति है। यह २६ फुट ऊँची है और २७ तथा १२ वर्ष ईसा के पूर्व बनी थी।

एथेन्स के प्रसिद्ध स्थान

एथिना नीके का मन्दिर—४०० बी० सी० में बना था। यह शुद्ध पेनटेलिक संगमरमर का बना हुआ है। यह सिमन के २६ फुट ऊँचे गढ़गज़ पर बना हुआ है। यह मन्दिर प्रापीलिया की संगमरमर की सीढ़ी दाहिनी ओर है। यह मन्दिर यूनानी कला का एक सुन्दर चिन्ह है। इसमें पूजा करने के लिये एक कमरा है। जिसमें एथिना की मूर्ति खड़ी है। इस विजय मूर्ति के एक हाथ में अनार और दूसरे में लोहे का टोप यह मन्दिर शायद यूनान की उस विजय की याद में बनाया गया था जो यूनान ने फारस के ऊपर फ्लेटे में प्राप्त की थी।

मन्दिर की लम्बाई २७ फुट चौड़ाई १७ फुट और ऊँचाई १३ फुट ३ इंच थी। इस मन्दिर के टूटे पत्थर ऐक्रोपोलिस अजायबघर में रक्खे हैं। रोस, स्चबर्ट और हेनसन ने इस मन्दिर को १७३५-३६ ई० में फिर से बना कर तयार किया। इस स्थान पर खड़े होकर एथेन्स का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है। फेलरोन की खाड़ी, पिरेयूम, सालमिस, एल्यूसिस की खाड़ी, ऐक्रोकोरिंथ एजिना, आरगोलिस की पहाड़ियाँ, द्रीद्रा, का द्वीप आदि स्थान सामने की ओर दृष्टिगोचर होते हैं। लिकाबेट्रा की पहाड़ी अपनी शिखाओं तथा जैतून के वृक्षों की हरी पेटी के साथ सामने दिखाई पड़ती है। एथेन्स का मध्यवर्ती भाग और उसके दूसरी ओर फिलोपापासे की रोमन स्मृति भी दृष्टिगोचर होती हैं। इस स्थान पर से चांदनी रात में एथेन्स का दृश्य बड़ा रमणीक दिखलाई पड़ता है।

प्रोपीलिया मन्दिर—यह सुन्दर मन्दिर ४३७ बी० सी० में बनना आरम्भ हुआ था। इसे मेनसिक लेस संगतराश ने ५ साल के पश्चात् ४००,००० पौंड (लगभग ६०,००,००० रु०) की लागत पर तयार

किया था। यह मन्दिर १७० वर्ग फुट के क्षेत्रफल में स्थित है। इस मन्दिर में एक मध्यवर्ती प्रोपीलोन रकमण है। इसके दोनों ओर बरामदे बने हुये हैं। रोमन लोगों ने इस मन्दिर में आने के लिये एक सीढ़ीदार मार्ग बनाया था। यह मार्ग मध्यवर्ती द्वार को जाता है। इस चौड़े मार्ग के बीच में संगमरमर के टुकड़े हुये हैं। यहां पर पंथेनाइक त्योहार बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। जैसे हो हम प्रोपीलिया मन्दिर से बाहर निकलते हैं हमें दाहिनी ओर फ्लास्जियन की दीवार मिलती है।

प्रोपीलिया और मेडेन की पोर्टिको को मध्य में एक बड़े पत्थर के कटे हुये चबूतरे पर एथिना की मूर्ति है। यह मूर्ति २६ फुट ऊँची है।

पार्थेनोन—यह मन्दिर बिना स्तम्भ का बना हुआ है। अपनी बिगड़ी हुई दशा में भी यह मन्दिर अपनी सुन्दरता में एक ही है। यह स्वेत संगमरमर का बना हुआ था परन्तु अब काल के गाल में ग्रसित होकर इसका रंग सुनहरा हो गया है। इस मन्दिर को ४४७ बी० सी० में पेरीसलेस बादशाह ने बनवाया था।

एथेनापलोस को यूनानी लोग सरस्वती का औतार मानते हैं।

इस बड़े मन्दिर में ५० मनुष्य के आकार के बराबर वाली मूर्तियां है। एथेना की मूर्ति ४२ फुट ६ इंच है।

पोर्टिको आफ मेडेन्स—(कन्या कुमारियों का बरामदा) अथवा कर्याटिडेस का मन्दिर भी बड़ा सुन्दर है। इसमें के क्रोप्स (यूनान का प्रथम राजा) की स्मृत बनी है। इस मन्दिर की छत ६ कुमारियों के ऊपर बनी है। यह कुमारियों की मूर्तियां मनुष्य के शरीर से अधिक ऊँची हैं। यह मूर्तियां संगमरमर की बनी हुई थी परन्तु समय के कारण उनके रंग पीले पड़ गये हैं। इनकी सुन्दरता देखकर मनुष्य को बड़ा अचम्भा होता है।

एरेच थीयोन का मन्दिर—फिलोस्लेस और आर्चीलोस्लेस शिल्पकारों ने बनाया था। यह एथेना पोलियास (नगर की मल्किन) स्मृति में बनाया गया था। बैजनटाइन समय में यह चर्च बनाया गया था और तुर्कों के समय यह रानियों के रहने का महल हो गया था।

एक्रोपोलिस अजायबघर—यह पार्थेनोन के पूर्व में स्थित है। यह १८७८ ई० में अक्रोपोलिस की प्राचीन स्मृतियों के रखने के लिये बनाया गया था। यहाँ पर तुर्क लोगों द्वारा तोड़ी हुई मूर्तियां रक्खी हैं। अजायबघर के अन्दर १० कमरे हैं। कमरा नम्बर एक सातवीं सदी बी० सी० की मूर्ति है जिसमें हरकुलीस हिड्रा (कई सिर का राक्षस) से लड़ रहा है। नम्बर दो में हरकुलीस ट्रीटन (समुद्र देवता) के लड़ रहा है। नवें नम्बर में एथेना हरकुलीस की भेंट जियस से करा रही है। नम्बर ५५ में एथेना का पवित्र जैतून का वृक्ष है। नम्बर तीन में एक शेर (याली) शेरनी (स्वेद) एक सांड पर आक्रमण कर रहे हैं।

दूसरे कमरे में शेरनी गाय के बच्चे पर आक्रमण करती हुई दिखाई गई है। इस कमरे की ३६ नम्बर की मूर्ति में तीन सिर का सांप की पूँछ वाला राक्षस है जिसे टीफोन कहते हैं।

तीसरे कमरे में देवियों की मूर्तियाँ हैं। चौथे कमरे में एथेना अपने भाले से राक्षस को मारती हुई दिखाई गई है। पाँचवे कमरे में छठवीं, पाचवीं और चौथी सदी

बी० सी० की स्त्री, पुरुष, एथेना, जेअ्रस, हरमेस आदि की मूर्तियाँ हैं। रोमन काल की मूर्तियाँ भी इस कमरे में हैं। छटें कमरे में पाँचवी सदी बी० सी० की स्त्रियों तथा कुमारियों की मूर्तियाँ हैं। सातवें कमरे में यूनानियों की विजय की मूर्तियां हैं। इस कमरे में ७०२ नम्बर की मूर्ति हर्मेस और ग्रेस देवियों की मूर्ति हैं जिसमें देवियां अपने बच्चों को लिये हैं। इस कमरे में प्रेम की देवी की भी मूर्ति है। आठवें और नवें कमरे में प्राचीन टूटी हुई मूर्तियों का संग्रह है। यह मूर्तियां अधिकतर संगमरमर की बनी हुई हैं। दसवें नम्बर के कमरे में विंगलेसविट्री का छोटा मन्दिर है। इस कमरे में विजय की देवियाँ एथेना देवी के प्रति अपना अपना कार्य करती हुई दिखाई हैं।

एक स्थान पर एक पत्थर की बड़ी शिला पर एथेन्स तथा समोस के बीच संधि का दृश्य दिखाया गया है। एथेना देवी समोस की देवी हेरा का स्वागत कर रही है।

फिलोपापोस की स्मृतियाँ—फिलोपापोस की ढालू पहाड़ी पर हैं यहाँ पहाड़ी सेंट डेमेट्रियस चर्च के

सामने दूसरी ओर है यह ११४ ई० में सीरिया के राजा ऐंटियोकोस एपीफेनेस की स्मृति में बनाई गईं थीं। फिलोपापोस के दाहिनी ओर सेल्यूकसनिकेटर की मूर्ति और बांई ओर फिलोपापोस के दादा की मूर्ति है। फिलोपापोस पहाड़ी के उत्तरी-पश्चिमी भाग में तीन कमरों का बना हुआ कारागार है जिसमें विष का प्याला पीने के पहिले सुक़रात बन्द किया गया था। सुक़रात पहिले एक शिल्पकार था परन्तु बाद को वह युवकों को शिक्षा देने लगा कि वे उस समय के अंध विश्वास पर विश्वास न करें और उसके बताये हुये मार्ग पर चलें। इसी कारण सुक़रात के बैरियों ने उसपर मुक़दमा चलाया। उसके मुक़दमे ५०१ जज बैठाये गये थे। उसे मृत्यु दण्ड दिया गया। उसने अपने मित्रों के सामने विष का प्याला पीकर अपने जीवन का अंत किया था। सुक़रात ४६६ में पैदा हुआ और ३६६ बी० सी० में मरा था।

थेसीवोन का मन्दिर अक्रोपोलिस से उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। यह मन्दिर ४२१ बी० सी० में बना था। यह मदिन्र अब भी अच्छी दशा में है। देरोडेस

अटिकस का भवन दूसरी सदी में बना था। इस तीबरियस क्लाडियस हेरोडेस अटिकस ने अपनी स्त्री की याद में बनवाया था।

डियोनीसस का थियेटर (पश्चिमी गाथा के अनुसार) संसार का प्रथम थियेटरघर है। वहां पर ईस्चीलस सोफोक्लीस यूरूपडीस के तमाशे खेले जाते थे। थियेटर के अन्दर भांति भाँति की मूर्तियां तथा तस्वीरें हैं। दीवारों में रंग विरंगी चित्रकारियां की हुई है। यूनानी थियेटरों में बैठने के लिये अर्ध वृत में स्थान बनाया जाता था। दर्शक लोगों के लिये पत्थर की कुर्सियां बनी रहती थीं। इस थियेटर में प्लैटो के कथनानुसार ३०,००० मनुष्य बैठ सकते थे।

हैडियन की मेंहराब तथा ओलिम्पियन जियस का मन्दिर—हैडियन एक राजा था। वह एथेन्स को बहुत प्यार करता था। उसने स्वयं एथेन्स के एक भाग का निर्माण किया था जिसके द्वार पर उसने अपने नाम का मेहराब बनवाया था। मेहराब के ऊपर और हैड्रियन नगर की दूसरी ओर शिलालेखों

ने एथेन्स नगर लिखा है। मेहराब के ऊपर खिड़कियों की भांति तीन खुले द्वार हैं। जियस के मन्दिर में १०४ खम्भे थे। इसका ऊपरी चबूतरा ३५२१ फुट लम्बा और

प्रेसीडेन्ट के गार्ड झंडे लिये हुए अमरीकन सैनिकों का स्वागत करने के लिये एथेन्स के स्टाडियम में प्रवेश कर रहे हैं।

१३४० फुट चौड़ा है। इसके बनवाने में १,७२५,७५० पौंड (२५,८८६,२५० रु०) व्यय हुआ था अब समस्त
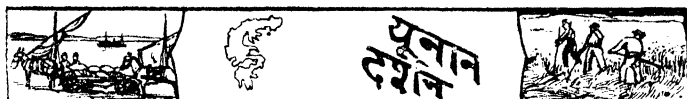
मन्दिर नष्ट हो गया है केवल १५ खम्भे शेष रह गये हैं।

स्टाडियम (आयताकार स्थान) हिमेटस पर्वत के ऊपर है। यह एक प्राकृतिक पोले स्थान पर बनाया गया था। इसे ३०० बी० सी० में लिकोडर्गस ने बनाया १४० ई० में हेरोडोटेस अटीकस ने इसके खण्ड करने वाले तथा बैठने के लिये स्थानों पर पेनटेलिक संगमरमर पत्थर लगवाये। तुर्की अधिपत्त्र यह नष्ट कर दिया गया।

सिकन्दरिया के जार्ज अवेरोफ ने लगभग २४ लाख रु० इसको फिर से पहले सा बनाने में लगाया। १९०६ ई० में यह तयार हुआ और उसी साल यहां पर अन्तर-राष्ट्रीय ओलम्पिक गेम्स (खेल-कूद) हुये। ऐथेनियन लोगों स्टाडियम के अन्दर हेरोडेस को गाड़ा था और अब प्रवेश द्वार की दाहिनी ओर जार्ज अवेरोफ की स्मृति खाड़ी है जिससे यह पता चलता है कि जार्ज ने स्टाडियन को फिर से पहले की भांति शानदार बना दिया है।

यह आयताकार मैदान ६७० फुट लम्बा और १०६ फुट चौड़ा है। इसके ऊपर ५०,००० दर्शक बैठ सकते हैं। दर्शकों के बैठने के लिये संगमरमर के स्थान बने
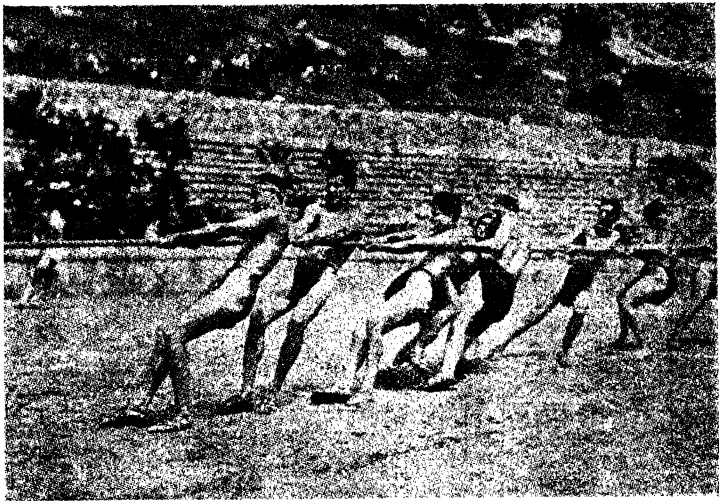
यूनानी सैनिक रस्सा खींच रहे हैं

हैं। चौकी की २४ पंक्तियां एक के ऊपर दूसरे करके हैं और २० बेंचों की पंक्तियां हैं।

नैशनल म्यूज़ियम—(राष्ट्रीय कौतुकालय) को
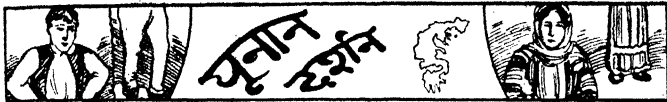
लांगे ने सन् १८८६–८६ में बनवाया था। इसके अन्दर लगभग सभी प्राचीन तथा आधुनिक वस्तुएँ हैं।

इसके मध्यवर्ती बड़े कमरे में माइसेनियन सभ्यता की सभी प्राचीन वस्तुएँ १६०० से ११०० बी० सी० की रक्खी हैं। यद्यपि यह वस्तुएँ माइसेनी में प्राप्त हुई हैं परन्तु इस सभ्यता का प्रचार क्रीट द्वीप से हुआ था।

इस अजायबघर के पहले से १६ केसों में यूनान के प्राचीन आभूषण जो मृतक क्रिया में लगते थे रक्खे हैं। केसों के भीतर तीन चतुर्भुज सोने के टुकड़े हैं जिनके ऊपरी तथा नीचे के भाग गोल हैं। एक टुकड़े पर मनुष्य और एक घायल शेर के बीच युद्ध दिखाया गया है। दूसरे टुकड़े पर दो योद्धा लड़ रहे हैं तीसरे टुकड़े में एक शेर चट्टानदार भूमि पर जाता हुआ दिखाई पड़ता है। यह माइसेलियन कला की सुन्दर वस्तुएँ हैं। केस नम्बर १७ में सेलखड़ी (एक प्रकार का स्वेत पत्थर) और तांबे के घरेलू बर्तन तथा पुष्प-पात्र हैं। केस १८ में सोने के प्याले, गुलदान, कृपाण और तलवार के कब्जे हैं। म्यूजियम के भीतर सारी वस्तुएँ केसों के अन्दर सुरक्षित रक्खी गई हैं। कुल १०८ केस

हैं। केसों के अन्दर चांदी, सोने, हाथो के दांत, पत्थर आदि को बनी हुई वस्तुएँ हैं। इन प्राचीन वस्तुओं से हमें प्राचीन यूनान का हाल मालूम हो जाता है। उस समय की सभ्यता का ज्ञान हमें हो जाता है।

वायु स्तम्भ तथा बाज़ार—सन् ३५ ई० में इसे अँड्रोनीकस नामक ज्योतिषी ने वायु स्तम्भ बनाया था। इस स्तम्भ के भीतर एक पानी की घड़ी तथा दीवार पर एक सूर्य-घड़ी थी। स्तम्भ के शुण्डाकार छत के ऊपर वायु-यंत्र लगा था। ट्रीटन देवता की मूर्ति बनी है जो एक भाले द्वारा वायु के रुख की ओर संकेत करती रहती है। इस स्तम्भ का व्यास २६ फुट और ऊँचाई ४२ फुट है। यह स्तम्भ अष्ट भुजाकार बना हुआ है। आठों भुजाएं आठों दिशाओं के सामने हैं। उत्तर की ओर की भुजा में एक बूढ़े आदमी की मूर्ति है जो कपड़ों का लबादा पहिने है। उत्तर-पूर्व की ओर एक बूढ़ा अपनी ढाल से वर्षा के ओलों को रोक रहा है। पूर्व की ओर एक नौजवान की मूर्ति है जो अनाज की बालें और फल ले जा रहा है। दक्षिण-पूर्व की ओर एक वृद्ध की मूर्ति है जिसमें वह वृद्ध अपने को वर्षा

से बचाने के लिये छिप रहा है। दक्षिण की ओर वर्षा लाने वाले की तस्वीर है। इस चित्र में नौजवान आदमी एक बड़े घड़े में पानी लाता हुआ दिखाया गया है। दक्षिण पश्चिम की ओर एक आदमी एक जहाज के एक भाग को उठाये हुये हैं। पश्चिम की ओर एक सुन्दर युवक है जो फूल गिरा रहा है। उत्तर-पश्चिम की ओर चित्र में एक मनुष्य एक पुष्प-पात्र लिये हुये है।

पानी की घड़ी में पानी अक्रोपोलिस पहाड़ी के नीचे वाली पानी की नदी से आता था।

वायु-स्तम्भ के पश्चिम की ओर बाज़ार का प्रवेश द्वार है। यह मार्ग रायल अगोरा को जाता है। यह पहले एथेन्स का तेल का बाज़ार था। जूलियस सीज़र और अगस्टस बादशाहों ने दान दिया था जिसके फल स्वरूप यह स्थान बना। बाज़ार के उत्तर की ओर एक शिला अपनी दशा में अब भी पृथ्वी पर लपटा हुआ है जिस पर तेल, नमक और दूसरे वस्तुओं का भाव लिखा है।

ऐतिहासिक तथा मनुष्य जाति के वर्णन विद्या का कौतुकालय

इस म्यूजियम में यूनान के स्वतंत्रता के युद्ध की

स्मृतियाँ हैं। यहाँ पर विख्यात लोगों की मूर्तियाँ तथा चित्र हैं। एतिहासिक पत्रों, संधियों, घोषणाओं देशी रीति-रिवाजों और हथियारों का यहाँ पर संग्रह है।

एथेन्स के समीपवर्ती स्थान

एजिना—की यात्रा के लिये ठीकेदार लोग प्रति सप्ताह दो बार प्रबन्ध करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को जो एजिना की यात्रा करना चाहता है उसे एक पौंड (लगभग १५ रु०) का एक टिकट खरीदना पड़ता है। इस टिकट से एजिना की यात्रा के लिये सवारी तथा पथ प्रदर्शक मिलता है।

एजिना के मन्दिर का खँडहर एक पर्वत पर स्थित है। इस मन्दिर को एथिना का मन्दिर कहते हैं। यह मन्दिर ५वीं सदी बी० सी० का बना हुआ है। मन्दिर में प्रत्येक ओर बारह खम्भे हैं। २० स्तम्भ जो १७ फुट ५ इंच ऊँचे है अब भी खड़े हैं। पहाड़ी के ऊपर से बहुत ही सुन्दर दृश्य देखने को मिलता है।

एथेन्स से बर्तमान सड़क एल्यूसिस को जाती है १४ मील लम्बी है। यह पवित्र मार्ग होकर है जो गुप्त देवियों के मन्दिर को जाता था।

एल्यूसिस पहुँचने के पहिले दाहिनी ओर दो नमक की झीलें हैं। इन झीलों में गुप्त देवियों के पुजारियों को ही मछली मारने का अधिकार प्राप्त था। एल्यूसिस को वर्तमान समय में लेवसीनिया कहते हैं। यहाँ की जन-संख्या लगभग ३००० है। यहाँ पर कारखाने तथा रेलवे स्टेशन हैं। यह एथेन्स से १७ मील की दूरी पर स्थित है।

पवित्र मंदिर के अंदर रहस्य की बातों की कल्पना की जाती थी। मन्दिर के पुजारी को विश्वास होता था कि वह इस मन्दिर में पूजा करने से अपने जीवन में और जीवन के पश्चात् भी सुखी रहेगा। अब प्राचीन मन्दिर नष्ट हो गया है और उसका बहुत थोड़ा सा भाग रह गया है।

यहाँ का छोटा म्यूजियम दक्षिण को ओर एक पहाड़ी पर है। एल्यूसिस के देवी, देवताओं और पुजारियों की मूर्तियां हैं। प्राचीन वस्तुएं और शिला लेख भी हैं। गोथ जाति वालों ने इस मन्दिर को ३९५ में नष्ट किया था।

कोरिंथ—यह एथेन्स से ७५ मील की दूरी पर है। मध्य कालीन का कोरिंथ नगर १८५८ ई० में

भूकम्प द्वारा नष्ट हो गया था। वहां के निवासियों ने फिर नया नगर बसाया था परन्तु फिर अप्रैल सन् १६२८ ई० के भूकम्प में नष्ट हो गया।

इस नगर की नींव प्राचीन काल में फिनीशियन लोगों की डाली थी। यह नगर काफे नामक ग्रीक-अमरीकन होटल के ठीक दूसरी ओर बसा था। प्राचीन नगर में प्राचीन यूनानी, रोमन और बैजनटाइन कला के खँडहर हैं। अगोरा के खंडहर अथवा बाज़ार के आगे यूनान की पवित्र छोटी नदी है। इस नदी में आदिसोते से पानी आता है जो अक्रो-कोरिंथ पर्वत के ऊपर है। पश्चिम की ओर अपोलो का मन्दिर है। यह मन्दिर ७वीं सदी बी० सी० का बना हुआ है। ४२ स्तम्भों में अब केवल सात रह गये हैं।

प्राचीन समय में कोरिंथ निवासियों ने एक सड़क पत्थर के टुकड़ों को जड़ कर बनाया था जिस पर उनके गुलाम भरे जहाजों को बैलों की सहायता से सरोनिक खाड़ी से कोरिंथ की खाड़ी को ले जाते थे। नेरो राजा ने इस स्थल डमरूमध्य को काट कर नहर बनवाने का काम आरम्भ किया। वह इसे अधूरा छोड़ कर ही

चला गया। १८८१ ई० में आधुनिक इंजीनियरों ने जहां से नहर का काम बन्द हुआ था वहीं से फिर बनाना
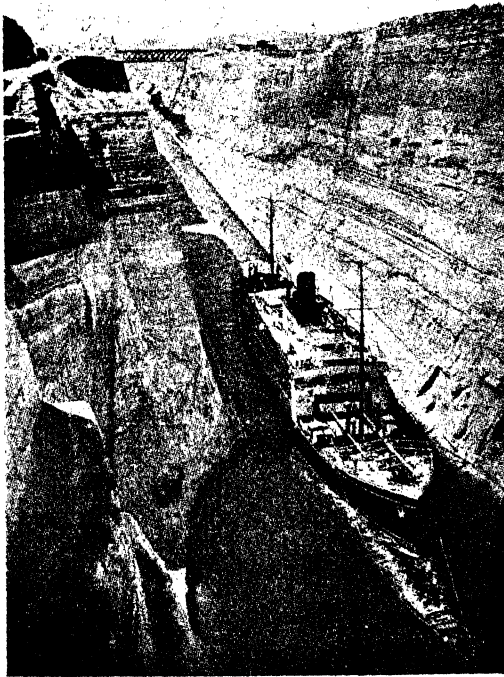
कोरिंथ नहर एड्रियाटिक सागर से एजियन सागर को छोटा मार्ग

आरम्भ किया और १८९१ ई० में ३,६०,००,००० रु०

लगाकर तयार किया। इस नहर के तयार होने से पिरीयूस और एड्रियाटिक सागर के बीच २०२ मील की दूरी कम हो गई है। नहर एक छोटी पहाड़ी को काट कर बनाई गई है। नहर को पार करता हुआ एक लोहे का पुल है जिस पर हो कर रेलवे लाइन तथा सड़क बनी हैं। कोरिंथ के म्यूज़ियम में प्राचीन वस्तुओं का अच्छा संग्रह है। अक्रोकोरिंथ का प्राचीन क़िला पहाड़ी की शिखा पर है। कहा जाता है कि इस क़िले को आज तक आक्रमण करके कोई विजय नहीं कर सका।

माइसेनी—कोरिंथ से मोटर द्वारा माइसेनी जाने में दो घंटे लगते हैं। यह अगोममनोन राजा का स्थान था। यह राजा ट्रोजन-युद्ध में यूनानियों का प्रधान योद्धा था। अक्रोपोलिस की पहाड़ी में ६१० फ़ुट की ऊँचाई पर राजा का महल है। इसी महल में अगामेमनोन की स्त्री क्लाइटेमनेस्ट्रा और उसके प्रेमी ने अगामेमनोन की हत्या की थी। इस महल के प्राचीन द्वार पर दो शेर (पत्थर के) चौकीदारी करते हैं। यहां पर एक क़ब्र में १५ लाशें तथा बहुत से आभूषण गड़े पाये गये
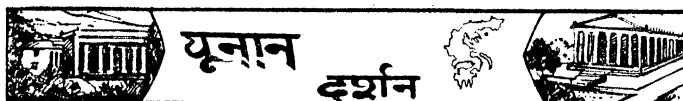
हैं जो एथेन्स के राष्ट्रीय म्यूज़ियम में रक्खे हैं। अगामेमनोन और उसके स्त्री की स्मृतियां देखने योग्य हैं।

टिरीन्स—माइसेनी से टिरीन्स को मोटर द्वारा १५ मिनट का मार्ग है। यहां पर प्राचीन पूर्व ऐतिहासिक काल के मन्दिर, महल और स्थान हैं। यहां के मकानों में बहुत बड़ी बड़ी पत्थर की शिलाएँ लगी हैं। दीवार की मोटाई २६ फुट है।

अर्गोस—टिरीन्स से मोटर द्वारा अर्गोस आध घंटे में और रेल द्वारा २० मिनट में पहुंचते हैं। यहां पर प्राचीन बाज़ार तथा थियेटर के खँडहर हैं।

नौपलिया—यह नगर नौपलिया की खाड़ी पर स्थित है। यह १८३४ ई० के पहले यूनान की राजधानी थी। ओथो राजा के गद्दी पर से उतारे जाने के पश्चात् यूनान की सरकार एथेन्स चली गई। इटली के निवासी इस नगर को नपोलीडि रोमानिया कहते हैं।

वेनिस तथा टर्की के निवासियों ने पर्लामीडी का क़िला बनाया था। इस क़िले को देखने के लिये क़िले के प्रधान अफ़सर से आज्ञा लेनी पड़ती है।

देश दर्शन

एपीडौरोस—नौपालिया से एपीडौरोस थीएटर (स्वांगघर) मोटर द्वारा आध घंटे में पहुँचते हैं। एपीडौरोस नगर सिकुलापियस (औषधि के देवता) का जन्म स्थान कहा जाता है। पश्चिम की ओर सुन्दर स्वांगघर है। यह स्वांगघर ४र्थी सदी बी० सी० में बना था। कहते हैं कि स्वांगघर के ऊँचे चबूतरे से यदि कोई मामूली तौर पर बोलता था तो भी सारे भवन में उसकी आवाज़ भली भाँति सुनाई देती थी। इसके अन्दर १६,००० मनुष्यों के बैठने का स्थान था। एपीडौरोस और स्वांगघर के बीच में एक म्यूज़ियम है जहाँ पर प्राचीन मूर्तियाँ तथा कला का अच्छा संग्रह है।

त्रिपोलिस—अर्गोस से त्रिपोलिस को मोटर से दो घंटे का मार्ग है। यह नगर समुद्र के धरातल से ३००० फुट ऊँचा है।

स्पार्टा—त्रिपोलिस से स्पार्टा को मोटर द्वारा तीन घंटे का मार्ग है। प्राचीन स्पार्टा नगर का अंत हो चुका है और वर्तमान नगर निराशापूर्ण है। यहां के प्राचीन स्थान लियोनीडियन, मेने लींओन, अक्रोपोलिस, स्वांग-

घर और अपोलो के मन्दिर हैं। स्पार्टा नगर की सुन्दरता उसके प्राचीन इतिहास में है।

ओलम्पिया नगर (ओलम्पिक खेलों का जन्म स्थान)—कोरिंथ से ओलम्पिया को रेल द्वारा ६ घंटे का मार्ग है। ओलम्पिया नगर में ही सर्व प्रथम ओलम्पिक खेलों का आरम्भ हुआ था। यहाँ के मन्दिर में सोने और हाथी दांत की बनी हुई जियस देवता की मूर्ति है। यह ग्रीक कला का एक अद्वितीय उदाहरण है। यह संसार के सात प्रसिद्ध अद्भुत वस्तुओं में गिनी जाती थी। यहां पर अधिकांश खंडहर उन भवनों के हैं जहाँ पर खेलने वाले लोग रहते थे और अपना सामान आदि रखते थे। यह नगर जंगली पहाड़ी के मध्य में स्थित है।

डेल्फी नगर—एथेन्स से एल्युसिस, मेगारा, थेबेस और लिवादिया होते हुये मोटर द्वारा डेल्फी को ७ घंटे में पहुँचते हैं। बसंत ऋतु में डेल्फी की सड़कें बसंतऋतु की बाढ़ से भरी रहती हैं। यह पानी आस पास की पहाड़ियों का बरफ पिघलने से आता है। इस-

लिये इस ऋतु में रेल द्वारा एथेन्स से लिवादिया और फिर मोटर द्वारा यात्रा करनी चाहिये।

म्यूज़ेज़ आदि देवियों के नाचने के स्थान पर डेल्फी नगर निवासी नाच रहे हैं।

डेल्फी पीथियन अपोलो देवता का निवास स्थान था। नगर के प्राचीन मन्दिर तथा भवन पहाड़ियों पर इधर उधर फैले हैं। नगर के चारो ओर का दृश्य बड़ा ही मनोहर है। पारनासस पर्वत पर बरफ जमी रहती
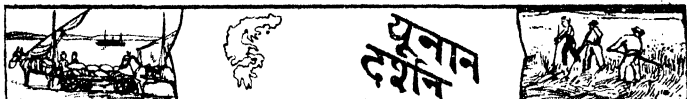
है। यह सरस्वती का स्थान माना जाता है। यहाँ का अपोलो देवता का मन्दिर है। इस मन्दिर को यूनानी लोग बहुत पवित्र मानते हैं। यहां पर प्राचीन स्वाँग घर और भवनों के खंडहर हैं। यहाँ के म्यूजियम में प्राचीन वस्तुओं का संग्रह है।

क्रीट—क्रीट का द्वीप रूम सागर में तीसरा बड़ा द्वीप है। क्रेटन बन्दरगाह से क्रीट का मार्ग स्टीमर द्वारा ३ घंटे का है। क्रीट के ईदा पर्वत पर जियस रोमन लोगों के देवता की उत्पत्ति हुई थी। क्रीटन ईदा के प्राचीन निवासियों और तेल्चिनीस लोगों ने ईदा पर्वत पर ही लोहे और पीतल के काम करने की कला सीखी थी। डीडालस नामक मनुष्य ने इसी स्थल पर चिड़ियों के पंखों का यंत्र बना कर उड़ने का सर्व प्रथम प्रयत्न किया था। टालोस देवता ने क्रीट को सुखी बनाया था मिनोस क्रीट के समुद्र का राजा और जियस देवता का पुत्र था उसने क्रीट के लिये कानून बनाये थे।

कैनिया नगर कैडिया की राजधानी है। यह एक बड़ा बन्दरगाह हैं। नोसोस महल माइनोस राजा रहा करता था। इस महल को बने हुये ५००० साल व्यतीत

हो गये । यह महल आग से जल कर नष्ट हो गया था। महल के अन्दर प्राचीन चित्र कला बड़ी मनोहर की हुई है। महल में एक पत्थर का सिंहासन है जो संसार का सबसे बड़ा प्राचीन सिंहासन माना जाता है। चारों ओर दुकानों, गोदामों के खंडहर हैं। इन स्थानों में इतने बड़े संदूक तथा मिट्टी के बर्तन हैं जिनमें एक मनुष्य सरलता पूर्वक छिपाया जा सकता है।

यहीं पर थीसियस देवता ने मिनोठाउर राक्षस को तलवार द्वारा मारा था। थीसियस की स्त्री का नाच स्थान अब भी यहां मौजूद है।
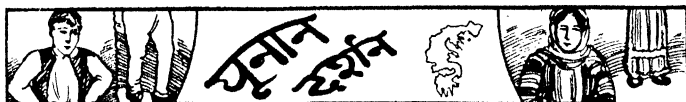
देव वर्णन

प्राचीन यूनानी मूर्ति पूजक थे। कोई भी यूनानी अपने धर्म के सिवा किसी दूसरे धर्म पर विश्वास नहीं करता था। आदि काल में पृथ्वी की कोई आकृति न थी और यह एक ठोस पदार्थ थी उसके पश्चात् आकाश और पृथ्वी अलग अलग हुये। उसके बाद पृथ्वी पर दीर्घ शरीर तथा शक्ति वाले देवगण उत्पन्न हुये। इन देवगणों को यूनानी लोग टीटन के नाम से पुकारते थे। इनकी उत्पत्ति आकाश और पृथ्वी से हुई थी। टीटन का राज्य पृथ्वी पर बहुत समय तक रहा उसके बाद अधिक धार्मिक लोगों की उत्पत्ति हुई जो आकाश के राजा जियस के पास गये और उससे टीटन तथा राक्षसों के उत्पात का वर्णन किया। जियस को क्रोध आया और उसने टीटन तथा राक्षसों की शक्ति को छीन लिया। इस पर टीटन तथा राक्षस बड़े क्रोधित हुये और उन्होंने आकाश को घेर लिया परन्तु उन्हें जियस ने पराजित किया और पृथ्वी के अथाह समुद्र टारटारस में गाड़ दिया। इस प्रकार प्रकृति की शक्तियों का नाश करने के पश्चात् जियस ने ओलिम्पस पर्वत पर अपना

सिंहासन बनाया। ओलिम्पस पर्वत की शिखा आकाश को छूति थी।

नीचे यूनानी प्रधान देवताओं प्रथा देवियों की तालिका दी जाती है।

क्रोनोस—"समय" जिसे रोमन लोग शनि कहते थे यूनानी जाति का एक प्राचीन प्रधान देवता था वह यूरानस तथा गीआ का पुत्र था।

यूनानी लोग आकाश को यूरानस तथा पृथ्वी को गीआ भी कहते थे। रोमन लोग आकाश को कोलस और पृथ्वी को टेरा कहते थे। यूरानस को जियस का पिता कहते हैं।

जियस—इस देवता को सीरिया निवासी बाल और रोमन जुपिटर कहते थे। यह आकाश का राजा तथा देवताओं और मनुष्यों का पिता था। इसे ईदा पर्वत के एक कंदरा में शिक्षा मिली थी। बचपन में ही जियस ने टीटन लोगों से १० वर्ष तक युद्ध किया। जियस ने उन्हें हरा कर टारटारस के समीप एक कंदरा में कैद कर दिया था।

पालास एथिना—यह क्वांरी थी। रोमन लोग इसे माइनर्वा देवी कहते थे। यह जियस तथा मेटिस की पुत्री थी और बुद्धि, युद्ध तथा कला की देवी थी। भारत में इस देवी को सरस्वती कहते हैं। हेफीस्टोस ने जियस के सिर पर एक तमाचा मारा था जिसने एथिना जियस के मस्तिष्क के बाहर निकल आई।

हेरा—रोमन लोग इसे जूना कहते थे। यह जियस की बहिन तथा स्त्री थी। यह देवी व्याह की मलकिन थी विवाहित स्त्री की रक्षा करती थी। यह द्वेष भाव रखने वाली पत्नी थी।

पोसीडन—रोमन लोग इसे नैपचुन कहते थे। यह क्रोनोस का पुत्र और जियस तथा हेड्स का भाई था। यह समुद्र, नदी और झरनों का देवता था। जियस के राज्य से यह द्वेष रखता था इसलिये उसे सज़ा मिली थी।

हेड्स—रोमन लोग इसे प्लूटो कहते हैं। यह पताल का देवता था। यह जियस और पोसीडन का भाई था।

डेमेटर—रोमन लोग इसे सेरेंस कहते थे। यह क्रोनोस की पुत्री थी। इसे कृषि तथा नाज की देवी कहते हैं।

ऐफ्रोडाइट—सीरियन निवासी अस्टार्टे तथा रोमन लोग वीनस कहते हैं। यह प्रेम और सुन्दरता की देवी थी। यह जियस की पुत्री थी। यह प्राचीन कथा के अनुसार समुद्र के फेन से उत्पन्न हुई थी। इसका पुत्र इरोस था जिसे रोमन लोग क्यूपिड कहते थे।

हफेस्टोस—रोमन लोग इसे बाल्कन कहते हैं यह नियस का पुत्र तथा ऐफ्रोडाइट का पति था। यह अग्नि देवता है। इसने देवताओं के अस्त्र-शस्त्र बनाये थे। इसका कारखाना अग्नेय पर्वतों तथा ओलिम्पस पर्वत पर था। इस देवता की सहायता साइक्लोप जाति करती थी। साइक्लोप राक्षसों की जाति थी। इस जाति वाले राक्षसों के शिर पर केवल एक आँख होती थी। यह सिसली के गड़रिये थे और शरीर के बड़े भारी होते थे। यह मनुष्य भक्षण करते थे।

एरेस—रोमन लोग इसे मार्स कहते हैं। यह जियस का पुत्र था। इसे युद्ध देवता कहते हैं।

फोयबस—यह कला, औषधि, गान विद्या और कविता का देवता माना जाता है। यह जियस का पुत्र है और भविष्य वाणी करता है। रोमन लोग इसे अपोलो कहते हैं।

आर्टेमिस—चन्द्रमा को कहते हैं। यूनानी लोग चन्द्रमा को स्त्री लिंग मानते हैं। यह शिकार की देवी है। यह देवी क्वांरी और फोयबस की जुड़वा बहिन थी। यह विवाह तथा सत्य की सभानेत्री मानी जाती है।

हर्मिस—यह जियस का पुत्र था। रोमन लोग इसे मरकरी कहते हैं। यह जियस का दूत, यात्रियों, गड़रियों, व्यापारियों, डाकुओं का मालिक था। यह व्यापार तथा डाकुओं का देवता माना जाता है। यह देवता अधिकतर चोरी तथा बदमासी का काम करता था इसने पोसीडन का त्रिशूल, ऐफ्रोडाइट की पेटी और मार्स का मुकुट चुराया था। यह पंख वाली टोपी पहिनता था इसके शरीर में पैर तक पंख थे। यह वायु की भांति उड़ सकता था।

डियोनीस—यह आनन्द तथा मदिरा का देवता माना जाता है। रोमन लोग इसे बाचस कहते हैं और यह जियस का पुत्र है। इसने मदिरा बनाने की कला लोगों को बतलाया।

अडोनिस—सीरिया निवासी इसे तामूज कहते हैं। यह सिनीरस तथा मीरहा का पुत्र था। ऐफ्रेडाइट देवी इससे प्रेम करती थी एक बार जब यह देवता शिकार खेलने गया था तो बन में इसे जंगली सुअर ने मार डाला था परन्तु इसको ऐफ्रोडाइट देवी ने फूल बना दिया था।

इन देवी देवताओं के सिवा, बन, पर्वत, खेत, नदी चरागाह, झील आदि स्थानों में भी देवी देवता भी वास किया करते थे। यह अपने संगीत से मनुष्यों को मोहित कर लेते थे और उन्हें बर्बाद कर डालते थे। जियस से उत्पन्न हुई एक जाति थी जो मनुष्य तथा देवताओं में सम्बन्ध उत्पन्न करके उन्हें जोड़ती थी। इस प्रकार के एक दूसरे जीव थे जो मनुष्य तथा जानवरों के बीच सम्बन्ध उत्पन्न करते थे। यूनानी लोग दुनियावी आनन्द में अधिक विश्वास करते थे। परन्तु वे जीवन के पश्चात्

सजा अथवा पारितोषिक में भी विश्वास करते थे। वे अनन्त जीवन में भी विश्वास करते थे। मृतक लोगों को हरमेस (यम) तीन न्यायाधीशों के सामने ले जाता था। यदि न्यायाधीश उस मृतक मनुष्य को पारितोषिक देते थे। तो वह सत्य तथा आनन्द के स्थान |फ्लीजियम (आनन्द द्वीप) में भेजा जाता था और यदि उसे सजा मिलती थी तो वह तरतारस (नरक) में भेजा जाता था।

पोटियस समुद्र का एक उप-देवता जिसका ऊपरी शरीर मनुष्य का और नीचे का शरीर मछली का होता था।

इनके सिवा, पान, सैटायर, सीलवान आदि उप-देवता थे।

देश दर्शन

यूनान के मकान बनाने वाले

यूनान में मिसेनी और हेलनी दो बड़ी जातियां प्राचीन काल में पैदा हुई थीं जिन्होंने बड़े सुदृढ़ भवन तयार किये जिनकी महिमा संसार में विदित है।

हेलनी जाति के पूर्व मिसेनी जाति ने अब से लगभग ३ हज़ार वर्ष पहिले यूनान में अद्भुत मकान बनाये। यह लोग उस राज्य के थे जो कोरिंथ और नौपलिया के मध्य स्थित थी और जिसके मुख्य नगर मिसेनी, अर्गोस और टिरीन्स थे। अभी हाल ही में यह बात ज्ञात हुई है कि मिसेनी जाति उस महान सभ्य, शक्तिशाली तथा प्राचीन जाति की शाखा थी जिसकी राजधानी क्रीट द्वीप में थी। क्रीट के निवासी मकान बनाने की कला में बड़े निपुण थे। अब से लगभग ५ हज़ार साल पहले क्रीट के निवासी सुन्दर बड़े भव्य महल तयार करते थे। यदि हम क्रीट में जाकर उन प्राचीन बड़े महलों के खँडहरों का अवलोकन करें तो हमारा हृदय उत्तेजित हो कर कांपने लगता है। क्रीट में सब से बड़ा महल मिनोस का था जहां पर मिनोटौर देव कारागार में रक्खा गया था।

क्रीट से शिल्पकार, मकान बनाने वाले तथा सजावट करने वाले लोगों में अनोखा ज्ञान, विस्मयजनक विद्या, प्रबल कल्पना शक्ति और आश्चर्यजनक निपुणता अवश्य रही होगी। अभी हाल में मकानों का बड़ा प्रदेश फिस्टोस और क्नोसोस में पृथ्वी के अन्दर से खोद कर निकाला गया है इनके राजभवनों, राज मन्दिरों और दरबारों की सीढ़िया संसार में अद्वितीय हैं। इन दरबारों से राजमहल के बड़े कमरों में जाने का मार्ग विशाल खम्भेदार ड्योढ़ियों में होकर है। चारों ओर सुन्दर विशाल बरामदे हैं जिनमें होकर रहने वाले कमरों को मार्ग जाता है। इन्हीं बरामदों में होकर राज्य काज के कमरों, पवित्र स्थानों को भी मार्ग है। बरामदों से ऊपरी तल्ले को सीढ़िया लगी हैं। ऊपरी तल्ले में बड़े कोठे बने हैं जहां पर बारूद अस्त्र-शस्त्र और खाने पीने का सामान एकत्रित करने के लिये बड़े विशाल कोठे बने हैं। बहुमूल्य वस्तुओं के रखने वाले कमरों की दीवारें बड़ी मोटी तथा भारी बनी हैं। राज्य महलों और नगर के अन्दर वैज्ञानिक पानी निकलने के लिये मोरियां बनी हुई हैं। राज्य महलों में अस्तरकारी के

ऊपर सुन्दर चित्रकारी तथा शोभाप्रद शिल्पकारी की गई है। यह भवन हमारे आधुनिक चतुर मकान बनाने वालों को चुनौती देते हैं कि वह उनसे अच्छे भवनों का निर्माण करें। इन भवनों को बनाने वाले लोग जब इतने चतुर थे तो फिर इनके पूर्वजों का क्या हाल रहा होगा। कदाचित् यदि हमें उनके बनाये हुये भवनों का वर्णन मिले तो हम उसे असम्भव की बात ही समझेंगे।

दीवारों को बनाने और दीवारों में छेद बनाने में मेसेनी लोगों ने बड़े भारी भारी शिलाओं के टुकड़ों का प्रयोग किया है। इन शिलाओं के टुकड़ों तथा भवनों को देख कर प्रतीत होता है कि बड़े पत्थर के टुकड़ों को टीटन (राक्षस तथा देव) लोगों ने पहाड़ों से काटा होगा, वे ही अपने कंधों पर लाद कर टुकड़ों को लाये होंगे और उन्होंने ही अपने कंधों पर रखकर ऊँचे स्थानों पर चढ़ा कर विशाल भवन तयार किये होंगे।

इन अद्भुत घबड़ाहट उत्पन्न करने वाली वस्तुओं में मिसेनी का लाएनगेट (शेर द्वार) है। यह द्वार बड़ी अद्भुत कारीगरी का उदाहरण है। इसमें तीन बड़ी

शिलाएँ लगी हैं। बाज़ू वाले पत्थर १०½ फुट ऊँचे हैं उनके ऊपर चौखट का पत्थर है। चौखट वाले पत्थर की लम्बाई १६½ फुट, चौड़ाई ८ फुट और मोटाई तीन फुट है। चौखट वाले पत्थर के ऊपर एक तिकोने पत्थर की बड़ी शिला है जिससे शेर की मूर्तियां बनी हैं। इन्हीं शेरों के नाम पर द्वार का नाम शेर द्वार रक्खा गया है। मिसेनी नगर में जाने के लिये यही प्रधान प्रवेश-द्वार था।

मिसेनी लोग बड़े चित्रकार तथा खाक़ा बनाने वाले भी थे। उन्होंने ही मेसेनी और यूनान के दूसरे भागों के मधुमक्खी के छत्ते की समाधियां बनाई थी। यह समाधियां एक समूची पहाड़ियों को काट कर बनाई गई हैं और मधुमक्खी के छत्तों की भांति होने के कारण ही उनका नाम मधुमक्खी का छत्ता रक्खा गया है। प्रत्येक कोठरी एक भूमि के भीतर वाले बड़े कमरे की भांति प्रतीत होती है। मिसेनी की समाधि अब तक मिलने वाली समाधियों में सब से बढ़ कर है। इस समाधि को कभी कभी अगामेमनोन की समाधि या अटरेयूस कोष गृह कहते हैं।

यूनान में ब्राक्डिङ्गनेजियन कला भी प्रचलित थी। इस कला द्वारा बनाये हुये गढ़ यूनान में बहुत हैं। टिरीन्स का गढ़ ६८० फुट लम्बा और लगभग ३३० फुट चौड़ा था। यह ऊँचे तथा नीचे दो चबूतरों में बंटा था। ऊँचे वाले चबूतरे में एक बड़ा महल बना था। गढ़ के चारों ओर एक बड़ी दीवार बनी हुई थी। इस बड़ी दीवार में ६ फुट से १० फुट तक लम्बे और ३ फुट चौड़े पत्थर के टुकड़े लगे हैं। यह बड़े पत्थर एक दूसरे के ऊपर उठाकर रक्खे गये थे यदि उनके बीच स्थान शेष रह जाता था या वह ठीक ठीक एक दूसरे पर नहीं बैठते थे तो शेष स्थान पत्थर के छोटे टुकड़ों से भर दिया जाता था। इस वृत्ताकार दीवार की ऊँचाई ६५ फुट और चौड़ाई २६ फुट थी।

इन पत्थर के बड़े टुकड़ों से हम अनुमान लगा सकते हैं कि इनके बनाने वाले कितने बड़े रहे होंगे। हमे मिसेनी जाति के पूर्वजों का हाल एतिहास द्वारा ज्ञात नहीं है। परन्तु लोगों को विश्वास है कि यूनान में सब से पहिले जिन लोगों ने मकान बनाया वह जिन और राक्षस थे। प्राचीन क्रीट अभी बहुत समय नहीं
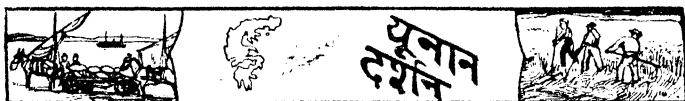
बीता कि पृथ्वी के अन्दर घुस गया है, यदि वह प्राचीन स्थान होते तो हमें वहां की प्राचीन सभ्यता का और अधिक प्रमाण मिलता। प्राचीन राक्षसों के बनाए हुये स्थान अब भी साइक्लोपियन के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन साइक्लोप लोगों का कुछ हाल हमें यूलिसिस की कहानी से कुछ पता चलता है कि वह किस प्रकार पत्थर की बड़ी शिलाएं उखाड़ कर युलिसिस के जहाज को तोड़ने के लिये समुद्र में फेंकते थे।

यूनान के दूसरे बड़े मकान बनाने वाले निपुण हेलनी जाति के लोग थे। हेलनी जाति वालों ने अपनी कला के कारण संसार में सदैव के लिये अपना आदरणीय नाम पैदा कर लिया है। इस जाति के लोगों ने ही पार्थेनोन को बनाया था। इन लोगों ने ही एथेन्स तथा समस्त यूनान और उसके द्वीपों में मन्दिर, भवन, गढ़ मूर्तियां आदि बनाकर सजा दिया था। हेलनी लोग यूनानी के नाम से भी प्रसिद्ध हैं इस लिये हम उनके लिये यूनानी शब्द का ही प्रयोग करेंगे।

कहा जाता है कि यूनानी मकान बनाने वाले मिसेनी लोगों के ही औलाद हैं। आशा की जाती है कि

किसी समय क्रीटन मिसेनी और यूनानी लोगों की कला में सम्बन्ध करके यूनान के बड़े मकान बनाने वाले वीर पुरुषों की एक कहानी तयार करना सरल हो जावेगा परन्तु अभी पूरा पूरा प्रमाण नहीं मिल रहा है।

यूनानी लोगों ने अपने प्राचीन निवासियों की कला से बहुत कुछ सीखा था। उन लोगों का सम्बन्ध पूर्वी देशों सीरिया और मिश्र आदि से भी था। यह देश भी प्राचीन काल में बड़े सभ्य थे। इसलिये यून नी लोगों ने इनसे भी कला सीखा होगा। परन्तु फिर भी यह बात माननी होगी कि यूनानी लोग ऐसे विद्यार्थी थे जो कला को सीखने के पश्चात् केवल नकल ही नहीं करते थे वरन् उसमें नवीनता का आविष्कार करते थे।

यूनानी लोगों के मकान बनाने की शैली अथवा विधि तीन प्रकार की है। १–डोरिक, २–आयोनिक, ३–कोरिंथियन।

इनमें डोरिक विधि सबसे प्राचीन है। यह विधि बड़ी सादी तथा स्थूल है। इस विधि वाले स्तम्भों के

आधार नहीं होते थे। खम्भों के कंधे नीचे की ओर भारी होते थे और उनके सिरे पर एक वर्गाकार पत्थर होता था। खम्भों के मध्यवर्ती भाग में लम्बाकार पट्टियां होती थीं। इनके सिवा जो पट्टियां होती थीं उनमें कारीगरी, शिल्पकारी और चित्रकारी की हुई होती थी। चित्रकारी तथा लम्बाकार पट्टियों के मध्य जो पट्टी होती थी वह नाली अथवा झुर्रीदार बनी होती थीं। इस शैली का बना हुआ पर्थिनोन का भवन सबसे अधिक सुन्दर है।

आयोनिक शैली खम्भों में यह प्रधानता होती है कि खम्भों के सिरे पर वक्र रेखाओं का एक गोला मुट्ठा होता है।

कोरिंथियन शैली के खम्भों के सिरों में भी प्रधानता होती है। खम्भों के सिरे घंटों की सूरत के बनते हैं और उनमें पत्तियों की सूरत बनी रहती है।

पचास साल पहले मिसेनियन और यूनानी मकान बनाने वालों की कला की वस्तुएँ, शिल्पकारी, बर्तन, धातु की वस्तुयें और आभूषण आदि पृथ्वी के भीतर

गड़ी थीं और उनका पता न था परन्तु अब उनका अधिकांश भाग भूमि खोद कर निकाला गया है और वह एथेन्स तथा यूनान के दूसरे अजायब घरों में रक्खा गया है। इंगलैण्ड, अमरीका और फ्रान्स ने यूनान की सहायता धन-जन और पराक्रम से इन प्राचीन वस्तुओं के खोदने और पता लगाने में किया है।

खुदाई के काम से हमें संसार की प्राचीन सभ्यता, विद्या और वस्तुओं का ज्ञान होता है। जो बातें हमें इतिहास द्वारा ज्ञात नहीं होती हैं उन पर खोदाई गई वस्तुयें प्रकाश डालती हैं।

उद्योग-धंधे

यूनान के अधिकांश उद्योगों का सम्बन्ध कृषि है। तम्बाकू और केरेन्ट (किशकिश) के सिवा और भी बहुत सी वस्तुयें ऐसी पैदा की जाती हैं जो व्यापार से सम्बन्ध रखने वाली हैं।

सुल्ताना अंगूर एक खास प्रकार का अंगूर होता है जिसे सूखने पर सुल्ताना कहते हैं। क्रीट में इसकी उपज बहुत अच्छी होती है। क्रीट में जो बाहरी यूनानी आकर बसे हैं उनके परिश्रम से फलों की उपज बहुत अच्छी होने लगी है। यूनान में और भी कई प्रकार के अंगूर पैदा होते हैं। अंगूर से मदिरा तयार की जाती है जो यूनान में भी खर्च होती है और बाहर भी भेजी जाती है। जिस मदिरा को यूनानी लोग रोज प्रयोग करते हैं वह रेस्टिनार्टो कहलातो है। इसका रेस्टिनार्टो इसलिये नाम है कि इसमें सनोवर वृत्त की धूप मिलाई जाती है। जो शराब बाहर भेजी जाती है उसमें धूप नहीं मिलाई जाती है। धूप मिली हुई शराब में एक अजीब प्रकार का स्वाद होता है जिसे यूनानी लोग ही जानते

हैं। दूसरे लोग यदि इस मजे का आनन्द उठाना चाहते हैं तो उन्हें कुछ समय तक इसका प्रयोग करना आवश्यक है।

जैतून की उपज यूनान में खूब होती है। योरुप में जैतून की उपज के ध्यान से यूनान का तीसरा नम्बर है। समुद्र के धरातल से ३ हज़ार फुट की ऊँचाई तक जैतून के बाग पाये जाते हैं। तटीय स्थानों के बगीचों में सबसे अच्छा जैतून पैदा होता है। जैतून का तेल निकालने के लिये यूनान में अभी वहीं प्राचीन रीति प्रचलित है परन्तु अब मशीनों का प्रयोग होने लगा है। और मशीनें धीरे धीरे आगे बढ़ रही हैं। जैतून को नमक के पानी में लोग खाने के लिये रखते हैं। जैतून का तेल भी भोजन में प्रयोग किया जाता है यूनानी लोग रक्खे हुये जैतून तथा जैतून के तेल को अपने दैनिक भोजन में प्रयोग करते हैं। जैतून और उसका तेल विदेशों को भी भेजा जाता है।

अंजीर, नारंगी, टैञ्जराइन नींबू आदि की उपज भी अधिकता के साथ की जाती है। यह यूनानी निर्यात के प्रधान फल हैं।

गेहूँ, बाजरा, मक्का, जौ और राई यूनान के दूसरे प्रधान पौदे हैं। सेरील (गेहूँ की भाँति का अन्न) की उपज के लिये बड़ा ध्यान दिया जा रहा है तो भी इसकी उपज यूनान देश की मांग की पूर्ति नहीं कर रही है।

पिछले कुछ वर्षों से रेशम के कीड़ों के पालने का उद्योग यूनान में बहुत होने लगा है। यह एक प्रकार का राष्ट्रीय उद्योग हो गया है।

पहले यूनान में सामान तयार करने के लिये बड़े कारखाने नहीं थे। १९२३ ई० के बाद कारखाने खुलने लगे हैं और अब बड़े बड़े कारखाने खुल रहे हैं। यूनानी लोग कारखानों में अधिक से अधिक हाथ बटा रहे हैं। यूनानो सरकार भी उनकी सहायता कर रही है और उनको उन्नति देने के लिये नये नये नियम बना रही है। प्राचीन रोजगारों से दरी, साबुन, हैट और टोपी बनाने के कारखानों में काफी उन्नति हुई है। यूनान में खुशबूदार साबुन भी बनने लगा है। यूनान के साबुन में जैतून का तेल बड़ी मात्रा में मिलाया जाता है। चमड़ा तयार करने का काम भी यूनान में खूब होता है। चमड़ा तयार करने में जितने प्रकार के मसालों की आवश्यकता

होती है सभी यूनान में पाये जाते हैं और उन्हीं का प्रयोग किया जाता है। करैंट को बन्द कर बाहर भेजने में जिन जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है वह सभी सामान यूनान में तयार किया जाता है।

यूनान में जूते बहुत बनते हैं। जूते सुन्दर तथा फैशन वाले अच्छे चमड़ों के बनाये जाते हैं। अधिकांश मात्रा में यूनानी जूते ऐसे बनते हैं जो लाल रंग होते हैं और उनके आगे के भाग में काले रंग का फीते का गुच्छा लगा रहता है।

घरेलू काम के लिये मिट्टी के बर्तन बनाये जाते हैं। सुराहियां बहुत बनाई जाती हैं। अमरौसी में एक सोता है। पहले इसी सोते से एथेन्स पानी आता था। अमरौसी के समीप मिट्टी के बर्तन तयार करने वालों का एक मैदान है। जहाँ पर मिट्टी के बर्तन बहुत बड़ी मात्रा में तयार किये जाते हैं। सुराहियां उसी प्राचीन काल की लाल मिट्टी से तयार की जाती हैं जिससे प्रचीन यूनानी मिट्टी के बर्तन बनाये जाते थे।

खान के खोदने में बहुत कम लोग लगे हैं। सीसा और जस्ता अधिक मात्रा में निकाला जाता है। इसलिये
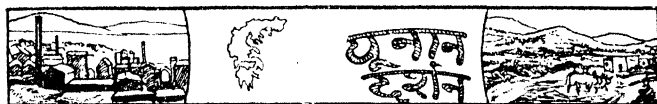
वह बाहर भेजा जाता है। नाक्सोस की कुरन्द की खानें बड़ी मूल्यवान हैं। यह द्वीप एजियन सागर में है जहां से एम्री कागज़ आता है। लोरियम प्रान्त एक बड़ा खानों का प्रदेश है। यहां की खानों में सीसा, चांदी आदि धातुयें निकाली जाती हैं।
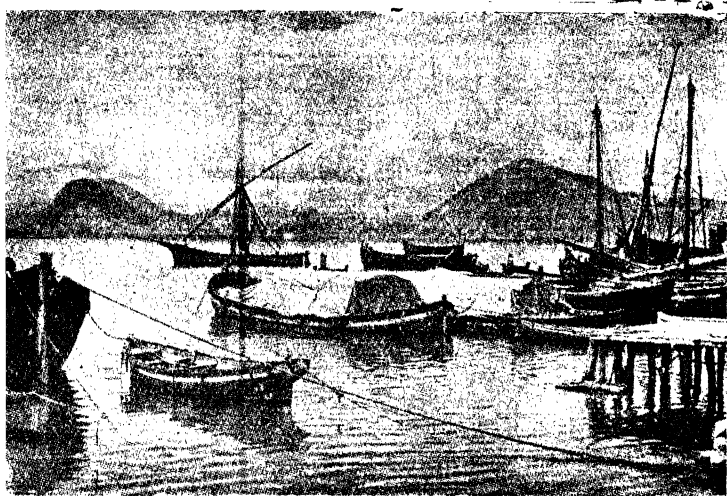
पतरस का मदिरा तथा करेंट (किशमिश) का बन्दरगाह।

यूनान में संगमरमर बहुत बड़ी मात्रा में पाया जाता है। इसी संगमरमर के बने हुये यूनान के प्राचीन मन्दिर

तथा भवन हैं। यह पत्थर बड़ा सुन्दर और चिकना होता है। इससे सुन्दर से सुन्दर वस्तु तयार की जा सकती है। इसमें रेखा बड़ी सुन्दरता के साथ बनाई जा सकती है। प्राचीन काल में ही यूनान की लगभग सभी संगमरमर की खानों का प्रयोग हो चुका है। पर खानें इतनी बड़ी हैं कि उनका अंत जल्दी नहीं हो सकता।

पैरोस पर्वत का संगमरमर सबसे अधिक सुन्दर होता है। पैरोस पर्वत के संगमरमर को पैरियन कहते हैं। पेंटेलीकस पर्वत का पेंटेलिक संगमरमर पैरियन संगमरमर की भांति ही श्वेत होता है। परन्तु पेंटेलिक संगमरमर पैरियन से अधिक कड़ा होता है। हेमीटस पर्वत पर नीला-श्वेत संगमरमर पाया जाता है इसके सिवा और भी दूसरे प्रकार और रंगों के पत्थर भी पाये जाते हैं।

प्राचीन काल में गुलामों से पत्थर की खानों के खुदने का काम लिया जाता था। कुछ खानों में अब भी प्राचीन औज़ारों के निशान मिलते हैं। पेंटेलेकस की संगमरमर की खान के खोदने का काम एक कम्पनी करती है। इस कम्पनी के पास अपनी रेलगाड़ियां
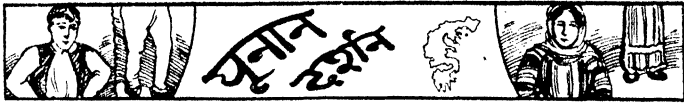
तथा मोटर लारियां हैं। संगमरमर बारूद से उड़ाया जाता है। बड़े बड़े टुकड़ों को नीचे लाने के लिये एक प्रकार की ढालू वस्तु बनाई गई है। पत्थर काटने, साफ करने, चीरने और पालिस करने का काम बड़ी सावधानी के साथ विज्ञान शास्त्र की सहायता से किया जाता है। सारा कार्य वर्तमान ढंग पर होता है परन्तु फिर भी कोई भी नये तरीके ने कुछ उन्नत्ति प्राचीन बातों की अपेक्षा नहीं कर दिखाया है। यूनानी खानों का संगमरमर संसार के सभी देशों को भेजा जाता है। यह यूनान की सम्पत्ति है। यूनान के प्राचीन पत्थर के मकान बनाने वालों ने ऐसे भवन तयार किये थे जो अमूल्य हैं और उनका मूल्य चांदी सोने से नहीं लगाया जा सकता है।

यूनान के द्वीप

यूनान प्राचीन समय से ही जहाज चलाने वाला देश रहा है। ग्रीक अथवा यूनानी संस्कृति का प्रचार यूनानी द्वीपों में था। यूनान तथा एशियाई कोचक के मध्य साईक्लडीस का द्वीप समूह स्थित है। इस द्वीप के लगभग मध्य में सीरास या सीरा का छोटा द्वीप स्थित है। इसके पूर्व में डेलोस का पर्वतीय द्वीप है। दक्षिण की ओर अर्द्ध व्यास में छोटे छोटे द्वीपों की श्रेणी है। इनमें क्रीट का द्वीप सब से बड़ा है। इसका क्षेत्रफल ३३२८ वर्गमील है। साईक्लेडीस द्वीपों में सब से बड़ा द्वीप नैक्सोस का है जिसका क्षेत्रफल १७३ वर्गमील है। साईरोस द्वीप का क्षेत्रफल ३१ वर्गमील और छोटे डेलोस का क्षेत्रफल एक वर्गमील है। यद्यपि एजियन संस्कृति का केन्द्र क्रीट था तो भी यूनानी संस्कृति का उत्थान छोटे छोटे द्वीपों से हुआ था।

एजियन सागर के तांबे के काल (३०००-४००० ईसा के पूर्व) साइक्लेडीस और सीरोस के द्वीप व्यवसाय तथा व्यापार के केन्द्र थे। इन द्वीपों में खनिज
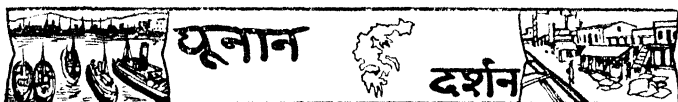
पदार्थ तथा सुन्दर पत्थर पाये जाते हैं। पारोस और नैक्सोस का संगमरमर पत्थर ताँबा प्राचीन समय में बहुत प्रसिद्ध था। बर्तन बनाने के लिये बहुत ही सुन्दर मिट्टी इन द्वीपों में पाई जाती थी। द्वीपों की स्थिति तथा उस समय चलने वाली हवाओं की सुन्दर गति होने के कारण जहाज खूब चला करते थे। वायु अनुकूल होने के कारण समीपवर्ती स्थानों के साथ व्यापार बड़ी सुगमता से होता था और यूनान का सामान दूसरे स्थान को भेजा जाता था।

कसकुट काल में जब क्रीट द्वीप की उन्नति हुई थी तो सीरोस द्वीप की अवनति हो गई। उन्नीसवीं सदी में सीरा पूर्वी भूमध्यसागर का एक बड़ा बन्दरगाह था। उस समय एथेन्स और उसके बन्दरगाह तुर्की साम्राज्य के निरंकुश शासन में अपनी उन्नति के लिये लड़ रहे थे। पिरेयूस प्रसिद्ध बन्दरगाह हो गया। डेलोस भी प्राचीन समय में एक बड़ा बन्दरगाह था। इस स्थान पर अपोलो देवता का जन्म हुआ था। पाँचवीं सदी में यह द्वीप जहाजी केन्द्र था। कुछ सदियों के बाद यह व्यापारिक केन्द्र हो गया था और यहां पर मुख्यतः गुलामों का

व्यापार हुआ करता था। तुर्की शासन काल में सीरा और डीलोस जहाजों के केन्द्र फिर बन गये थे। क्योंकि इन स्थानों की स्थिति ऐसी थी जहां पर जहाज़ सुगमता से चल तथा खड़े हो सकते थे। इन द्वीपों के निवासी बड़े मल्लाह तथा व्यापारी थे। यह लोग अपने गाँवों को समुद्र तट से दूर बसाते थे।

यूनान की सैनिक शक्ति

गत महायुद्ध में यूनानी सेना ने बड़ी वीरता के साथ काम किया था। मित्रराष्ट्रों की विजय तथा तुर्की सेना की पराजय होने पर एशियाई कोचक में यूनानी सेना ने अधिकार जमा लिया था। यूनान की प्राकृतिक बनावट के कारण वहां का तट बहुत लम्बा है और वहां पर बहुत सी खाड़ियां तथा अच्छे बन्दरगाह हैं।

यूनान में प्रत्येक २० से ४६ साल तक का मनुष्य सेना में भर्ती हो सकता है। निर्बलता, रोजगार और कुछ दूसरे कारणों से कुछ लोगों को सेना में भर्ती होने से छुटकारा भी मिल सकता है। जिन लोगों को नागरिक अधिकार प्राप्त हैं वह १८ वर्ष की अवस्था से स्वयंसेवक के रूप में सैनिक का काम कर सकते हैं। उत्तरी प्रान्तों में अप्रैल के महीने में और दक्षिणी प्रान्तों में अक्तूबर के महीने में सैनिकों की भर्ती होती है। यूनान में कुल ३३ भर्ती करने वाले ज़िले हैं। १८ महीने तक सैनिक सेवा करने के बाद १९½ साल तक प्रथम स्थाई सेना में और फिर ८ साल तक दूसरी स्थाई सेना में सैनिक को रहना पड़ता है। जन्डरमेरी

में ३० साल के भीतर के लोग ३ साल के लिये सैनिक सेवा में भरती किये जाते हैं। विद्यार्थियों की भर्ती १६ वर्ष के बाद और विश्वविद्यालयों के नवयुवकों की भरतो २५ वर्ष के बाद की जाती है। विश्वविद्यालय के पढ़े हुये लोग जन्डरमेरी में थोड़े समय के बाद ही अफसर नियुक्त कर दिये जाते हैं। प्रत्येक भांति के भर्ती होने वाले सैनिकों की संख्या ४०० से अधिक नहीं की जाती है।

१६३७ ई० में यूनान की सेना में ६७,१२१ सैनिक थे। इनमें ७१२१ अफसर थे। शान्ति के समय में एथेन्स, लरीसा, स्लोनीका और कवाला में सेना रहतो है। पैदल सेना के ६ जत्थे सेना के साथ और दो जत्थे और कुछ सैनिक युद्ध मंत्री के अधिकार में रहते हैं। एक पैदल सेना मशीनगनों से लैस रहती है। घोड़सवार सेना के दो भाग होते हैं। एक भाग के पास मशीन गन रहती है। पर्वतीय तोप चलाने वाली सेना के ११ भाग रहते हैं। उनके पास प्रत्येक भांति की तोपें तथा बन्दूकें आदि रहती हैं। मैदान वाली तोपों की ४ सेना रहती है। इसके सिवा बड़ी तोपों को चलाने वाले तीन सैनिक जत्थे होते हैं। सेना में इंजीनियरों की सेना तीन
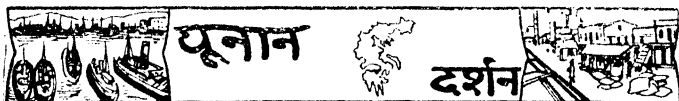
प्रकार की होती है एक तार का काम, दूसरी रेलवे का और तीसरी पानटून पुलों का काम करती रहती है।

शान्ति के समय युद्ध मंत्री सेना का सबसे बड़ा अफसर होता है। उसके अधिकार में एक सेक्रेटेरियट और कई एक दफ्तर होते हैं। युद्ध मंत्री की सहायता के लिये युद्ध विभाग का प्रधान अफसर तथा दूसरे विभाग होते हैं। सेना के निरीक्षण के लिये ११ चतुर सैनिक इन्स्पेक्टर होते हैं।

कर्नल और लैफ्टिनेन्ट कर्नल की शिक्षा के लिये उच्च सैनिक शिक्षा प्रदान की जाती है। मेजर और कैप्टन बनने वालों के लिये २ साल तक सैनिक शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। अफसरों को भी ६ महीने तक विशेष शिक्षा दी जाती है। भरती किये हुये लोगों की शिक्षा के लिये एक नियत कोर्स है और चार साल तक शिक्षा दी जाती है। जेन्डरमेरे के सैनिकों की शिक्षा के लिये २ साल की पढ़ाई अलग होती है।

युद्ध मंत्रीमंडल में हवाई शिक्षा दी जाती है। हवाई शिक्षा का प्रबन्ध एक डाइरेक्टर के आधीन रहता है। वर्तमान समय में यूनान में केवल तीन हवाई सैनिकों के

जत्थे हैं। इसके सिवा हवाई स्कूल, पार्क तथा स्वतंत्र हवाई जत्थे हैं।

समुद्री सेना—यूनानी लोग प्राचीन काल से ही अच्छे मल्लाह रहे हैं। १६२१-२८ ई० तक के भीतर यूनानी सरकार के बुलाने पर तीन ब्रिटिश सैनिक अफसरों के जत्थे यूनान गये और उन्होंने यूनानी जल-सेना को अधिक शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया।

यूनान के लड़ाके जहाज़ आधुनिक नहीं हैं तो भी उन्हें ब्रिटिश जहाज़ों की भांति लड़ने की शिक्षा दी गई है।

१६२८ ई० में यूनान की जलसेना में दो लड़ाका जहाज थे। यह १६१४ ई० में संयुक्त राष्ट्र से मँगाये गये थे। इनका नाम किल्किस और लेमनोस है। तीन प्राचीन लड़ाका जहाज शिक्षा के लिये काम में लाए जाते हैं। एक आरमर्ड क्रूशियर (छोटा लड़ाका जहाज) है जिसका नाम जार्जियस अवेरोफ़ है। एक जहाज सुरंग लगाने वाला है। ११ विध्वंसकारक जहाज हैं। १२ टारपीडो (डुबुकनी नाव) और निरीक्षण करने वाले जहाज, ६ गोताखोर और कुछ छोटे सहायक जहाज हैं।